



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग I—खण्ड 1

PART I—Section 1

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 59]

नई दिल्ली, शुक्रवार, फरवरी 24, 2012/फाल्गुन 5, 1933

No. 59]

NEW DELHI, FRIDAY, FEBRUARY 24, 2012/PHALGUNA 5, 1933

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय

(पाटनरोधी तथा संबद्ध शुल्क महानिदेशालय)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 24 फरवरी, 2012

विषय : चीन जन.गण. के मूल के या वहां से निर्यातित विस्कोस फिलामेंट यार्न के आयात के बारे में लगाए गए पाटनरोधी शुल्क की निर्णायक समीक्षा-अंतिम जांच परिणाम ।

क. पृष्ठभूमि

सं. 15/23/2010-डीजीएडी.—यतः समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 (जिसे आगे अधिनियम कहा गया है) और समय-समय पर यथासंशोधित सीमा-शुल्क टैरिफ (पाटित वस्तुओं का अभिज्ञान, उन पर पाटनरोधी शुल्क का आकलन एवं संग्रहण तथा क्षति निर्धारण) नियमावली, 1995 (जिसे आगे पाटनरोधी नियमावली कहा गया है) को ध्यान में रखते हुए चीन जन.गण. (जिसे आगे संबद्ध देश कहा गया है) के मूल के या वहां से निर्यातित विस्कोस फिलामेंट यार्न (जिसे आगे संबद्ध वस्तु कहा गया है) के आयातों पर 4 अप्रैल, 2006 की अधिसूचना सं. 24/23/2004-डीजीएडी के तहत मूल रूप से निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की गई थी जिसके आधार पर 24 मई, 2006 की सी.शु. अधिसूचना सं. 45/2006 के तहत पाटनरोधी शुल्क लगाया गया था ।

2. और यतः इन अंतिम जांच परिणामों को निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा 22 मई, 2009 के अंतिम जांच परिणाम सं. 15/8/2007-डीजीएडी के तहत मध्यावधि समीक्षा जांच में संशोधित किया गया था । जिसके अनुसार केन्द्र सरकार ने 13 जुलाई, 2009 की सी.शु. अधिसूचना सं. 81/2009 के तहत पाटनरोधी शुल्क में संशोधन किया था ।

3. और यतः इंडियन मैटल एंड फैरो अलॉयज लि. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, रिट याचिका (सिविल) संख्या 2006 की 16893 के मामले में माननीय दिल्ली उच्च न्यायालय के आदेश को ध्यान में रखते हुए और पाटनरोधी नियमावली के नियम 23 के साथ पठित अधिनियम की धारा 9(क)(5) के अनुसार प्राधिकारी ने शुल्क को निरंतर जारी रखने की जरूरत की समीक्षा करने और इस बात की जांच करने कि क्या ऐसे शुल्क की समाप्ति से पाटन एवं क्षति जारी रहने या पुनरावृत्ति होने की संभावना होगी, के लिए निर्णायक समीक्षा जांच शुरू करते हुए 25 फरवरी, 2011 को सार्वजनिक सूचना जारी की जिसे भारत के राजपत्र, असाधारण में प्रकाशित किया गया और यतः दिनांक 24 मई, 2006 की अधिसूचना सं. 45/2006-सी.शु. (13 जुलाई, 2009 की अधिसूचना सं. 81/2009 द्वारा यथासंशोधित) के तहत अधिसूचित पाटनरोधी शुल्क की अवधि अधिनियम की धारा 9(क)(5) के अनुसार 9 मई, 2011 की अधिसूचना सं. 38/2011-सी.शु. के तहत 24 फरवरी, 2012 तक बढ़ा दी गई थी ।

ख. प्रक्रिया

4. इस कार्रवाई में निम्नलिखित प्रक्रिया का अनुपालन किया गया है :-

- i. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (2) के अनुसार भारत स्थित संबद्ध देश के दूतावास को जांच की शुरुआत के बारे में सूचित किया गया था ।
- ii. प्राधिकारी ने 25 फरवरी, 2011 की जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना की प्रतियां संबद्ध देश के दूतावास, संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों, उसके पास उपलब्ध सूचना के अनुसार ज्ञात आयातकों और अन्य हितबद्ध पक्षकारों तथा घरेलू उत्पादक को भेजी । इस जांच से संबंधित पक्षकारों से अनुरोध किया गया कि वे निर्धारित समय सीमा के भीतर प्रश्नावली का उत्तर दायर करें और लिखित में अपने विचारों से अवगत कराएं । निर्यातकों/उत्पादकों को भेजे गए पत्र और प्रश्नावलियों की प्रतियां भी ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों की सूची के साथ संबद्ध देश के दूतावास को यह अनुरोध करते हुए भेजी गई थीं कि वह संबद्ध देश के निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित समय के भीतर प्रश्नावलियों का उत्तर देने की सलाह दें ।
- iii. संगत सूचना मांगने के लिए पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (4) के अनुसार संबद्ध देश के निम्नलिखित ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं :

क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	मै. यीबिन ग्रेस कं. लि., हेंगटियान रोड, ननान इकोनॉमिक डेवलपमेंट जोन, यीबिन सिटी, सिचुआन प्रोविन्स, चीन जन.गण. 644002
2.	मै. यीबिन हेइस्ट फाइबर कं. लि., चीन जन.गण.
3.	मै. बाओडिंग स्क्वा ग्रुप, नं. 1369, सजेमगोमंग वेस्ट रोड, बाओडिंग सिटी, हेबेई प्रोविन्स -071055 चीन जन.गण.
4.	मै. जिनजियांग बाइसन कैमिकल फाइबर ग्रुप कं लि, जिनयुआन स्ट्रीट, बेइजान डिस्ट्रिक्ट, जिनजियांग सिटी, हेनान प्रोविन्स, चीन जन.गण.
5.	मै. जिलिन कैमिकल फाइबर ग्रुप कं. लि., 516-1, जियुझान स्ट्रीट, चांगयी डिस्ट्रिक्ट, जिलिन सिटी- -132115 चीन जन.गण.

इसके उत्तर में संबद्ध देश के एक निर्यातक/उत्पादक मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लि. कार्पोरेशन ने प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है ।

- iv. आवश्यक सूचना मांगते हुए भारत में निम्नलिखित ज्ञात घरेलू उत्पादकों, आयातकों, प्रयोक्ताओं और एसोसिएशनों को प्रश्नावलियां भेजी गई थीं ।

क्र.सं.	कंपनी का नाम
1.	मै. केसोराम रेयन, 9/1, आर.एन. मुखर्जी रोड, कोलकाता-700 001
2.	मै. इंडियन रेयन, बी-विंग, भूतल, आहूरा सेंटर, महाकाली केक्स रोड, अंधेरी (ईस्ट) मुंबई -400 093
3.	मै. सेंचुरी रेयन, सेंचुरी भवन, डा. एनीबेसेंट रोड, मुंबई -400 025
4.	मै. शाह ट्रेडिंग कंपनी मुंबई-21
5.	मै. व्यापार काम. एंड इंडस्ट्रीज लि., मुंबई -5
6.	मै. यश इंटरप्राइजेज, 347-2A, दफ्तरी निवास, तेलंग रोड नं.1, मतंगा सेंट्रल रेलवे, मुंबई-19
7.	मै. डोरीवाला इंडस्ट्रीज, 8 हजूरी चेम्बर्स, मै. डोरीवाला इंडस्ट्रीज, 8 हजूरी चेम्बर्स, जाम्पा बाजार, सूरत- 395003
8.	मै. मारवाड़ी ब्रदर्स, 77, इस्माइल करी रोड, अहमद बिल्डिंग, प्रथम तल, मुंबई -3
9.	मै. राजमल संस एंड ग्रुप, 1-ए, लदाकारा स्ट्रीट, सेवपेट, सेलम -2
10.	मै. चुन्नीलाल कुन्दनमाल, सेवपेट, सेलम -2
11.	मै. शांति टेक्सटाइल्स, 14, नागेर स्ट्रीट, सेवपेट, सेलम -2
12.	मै. किशन सेल्स कार्पोरेशन बंगलौर-560002
13.	मै. बिटू सिन्थेटिक्स प्रा. लि., 142/143, सुपर यार्न मार्केट, जाम्पा बाजार, सूरत-395003
14.	मै. अमृत रेयन, टमबाक्टा, पायघोनि, मुंबई

क्र.सं.	एसोसिएशन/अन्य नाम
1.	एसोसिएशन ऑफ़ मैन मेड फाइबर इंडस्ट्री ऑफ़ इंडिया, रेशम भवन, 5वीं मंजिल, 78, वीर नरीमन रोड, मुंबई -400 020

- v. जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के उत्तर में सलेम जिला आर्ट सिल्क मर्चेन्ट्स एसो. ने अपने अनुरोध दायर किए ।
- vi. वाणिज्यिक आसूचना एवं सांख्यिकी महानिदेशालय (डी जी सी आई एंड एस) से जांच अवधि और पूर्ववर्ती 3 वर्षों के लिए आयात के आंकड़े मांगे गए थे ।
- vii. प्राधिकारी द्वारा 25 फरवरी, 2011 को जारी अधिसूचना के अनुसरण में प्राधिकारी को संबद्ध वस्तु के धरेलू उत्पादक मै. इंडियन रेयन तथा मै. केसोराम रेयन की ओर से संबद्ध देश के उत्पादक

और/अथवा निर्यातक द्वारा भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु के पाटन के खिलाफ लागू पाटनरोधी शुल्क जारी रखने और उसकी राशि को बढ़ाने की मांग करते हुए ए एम एफ आई आई से एक प्रलेखित अनुरोध प्राप्त हुआ । तत्पश्चात मै. सेंचुरी रेयन ने भी क्षति विश्लेषण करने के लिए सूचना/आंकड़े प्रस्तुत किए ।

- viii. प्राधिकारी ने हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रस्तुत साक्ष्य का अगोपनीय रूपांतरण सार्वजनिक फाइल के रूप में उपलब्ध कराया जिसे हितबद्ध पक्षकारों के निरीक्षणार्थ खुला रखा ।
- ix. प्राधिकारी ने सामान्यतः स्वीकृत लेखा सिद्धांतों (जी ए ए पी) के आधार पर संभव सीमा तक घरेलू उत्पादकों द्वारा प्रस्तुत सूचना की जांच की है ताकि क्षति जारी रहने/पुनरावृत्ति होने की संभावना का विश्लेषण किया जा सके और भारत में संबद्ध वस्तु की उत्पादन लागत तथा क्षति रहित कीमत निकाली जा सके जिससे यह पता लगाया जा सके कि पाटन मार्जिन से कमतर पाटनरोधी शुल्क घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त करने के लिए पर्याप्त होगा ।
- x. पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (6) के अनुसार प्राधिकारी ने 25 जुलाई, 2011 को आयोजित सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार मौखिक रूप से व्यक्त करने के लिए सभी हितबद्ध पक्षकारों को अवसर भी प्रदान किया । सार्वजनिक सुनवाई में अपने विचार व्यक्त करने वाले पक्षकारों से मौखिक रूप से व्यक्त विचारों के लिखित अनुरोध दायर करने का आग्रह किया गया था । हितबद्ध पक्षकारों से प्राप्त लिखित अनुरोधों में दिए गए तर्कों पर जहां संगत पाया गया है, प्रकटन विवरण में विचार किया गया है ।
- xi. वर्तमान समीक्षा के प्रयोजनार्थ जांच अवधि 1 अक्टूबर, 2009 से 30 सितंबर, 2010 (12 माह) की है । तथापि, क्षति विश्लेषण में वर्ष 2007-08, 2008-09, 2009-10 और जांच अवधि शामिल होगी ।
- xii. घरेलू उत्पादकों तथा चीन जन.गण. के सहयोगी निर्यातक/उत्पादक द्वारा प्रस्तुत सूचना और आंकड़ों के संबंध में आवश्यक समझी गई सीमा तक सत्यापन किया गया था ।
- xiii. पाटनरोधी नियमावली के नियम 16 के अनुसार वर्तमान जांच में प्राधिकारी क समक्ष विचाराधीन आवश्यक तथ्यों का प्रकटन ज्ञात हितबद्ध पक्षकारों को किया गया था । प्रकटन विवरण पर प्राप्त टिप्पणियों पर संगत पाई गई सीमा तक इस जांच परिणाम में विचार किया गया है ।
- xiv. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी । संतुष्ट होने के बाद प्राधिकारी ने जहां जरूरी हुआ है, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है । जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था ।

XV. जहां किसी हितबद्ध पक्षकार ने वर्तमान जांच के दौरान आवश्यक सूचना जुटाने से मना किया है या उसे अन्यथा उपलब्ध नहीं कराया है अथवा जांच में अत्यधिक बाधा डाली है वहां प्राधिकारी ने "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर ये जांच परिणाम दर्ज किए हैं ।

Xvi. *** यह चिन्ह इस विवरण में हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रस्तुत सूचना का द्योतक है और प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत उसे गोपनीय ही माना है ।

ग. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा प्रकटन विवरण के पश्चात किए गए अनुरोध और उनकी जांच

मै. यीबिन हायस्ट फाइबर कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण.

प्रकटन विवरण के उत्तर में मै. यीबिन हायस्ट फाइबर कंपनी लिमिटेड, चीन जन.गण. के संक्षेप में अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

- उक्त प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां देने के लिए प्रदत्त समय पर्याप्त नहीं है ।
- मै. सेंचुरी रेयन का प्रस्तावित समावेशन : यह तर्क दिया गया है कि मै. सेंचुरी रेयन की विलंबित सूचना और आंकड़ों को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए था ।
- शुल्क के स्वरूप के बारे में यह अनुरोध किया गया है कि सीमशुल्क टैरिफ अधिनियम की धारा न 9क (5) के अंतर्गत प्राधिकारी को शुल्क के ऐसे अधिरोपण की अवधि आगे और केवल 5 वर्ष के लिए बढ़ाने की अनुमति है और आगे की ऐसी अवधि ऐसे विस्तार के आदेश की तारीख से शुरू होगी ।
- परिकलित सामान्य मूल्य का निर्धारण : यह तर्क दिया गया है कि सामान्य मूल्य के परिकलन का प्रस्ताव विस्तृत कार्यप्रणाली का प्रकटन किए बिना किया गया है । परिवर्तन लागत तथा खपत कारक का सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु प्रकटन नहीं किया गया है जिसे घरेलू उत्पादक ने ध्यान में रखा है ।
- यह अनुरोध किया गया है कि आवेदक पाटित आयातों के परिणाम के स्वरूप किसी क्षति के बिना बेहतर गति से वृद्धि कर रहे हैं । बाजार में कम आपूर्ति तथा घरेलू क्षमताओं के अभाव के कारण आयातों की हर हालत में जरूरत है । ऐसी परिस्थितियों में प्रस्तावित शुल्क अधिरोपण का एकमात्र परिणाम अनुषंगी उद्योग एवं वस्त्र उद्योग के लिए भेदभावपूर्ण होगा जा निर्यात एवं घरेलू दोनों बाजारों में अप्रतिस्पर्धी हो जाएंगे । इस मामले में स्पष्ट तौर पर आवेदकों ने पिछले 5 वर्षों से संरक्षण का लाभ उठाया है और वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए नियम 23 (1 ख) के साथ पठित धारा 9 क (5) के अंतर्गत की गई समीक्षा के तहत आगे और 5 वर्ष की अवधि के लिए समय बढ़ाने की जरूरत अब विधिसम्मत नहीं है ।

घरेलू उद्योग

प्रकटन विवरण के उत्तर में घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :-

- विचाराधीन उत्पाद के उत्पादन में शामिल परिवर्तन लागत के बारे में अनुरोधों को ध्यान में रखते हुए परिकलित सामान्य मूल्य की समीक्षा की जाए ।
- प्रतिवादी निर्यातक ने उत्पाद के लिए उपलब्ध वैट अंतर की सूचना नहीं दी है । उपलब्ध साक्ष्य से वैट की 16 प्रतिशत वापसी का पता चलता है । अतः निर्यात कीमत में 1 प्रतिशत का समायोजन किया जाना चाहिए ।
- पूर्ववर्ती जांचों में शुल्क बेंचमार्क आधार पर लगाया गया था जो कच्ची सामग्री की कीमत बढ़ने के कारण पाटन की स्थिति से निपटने में नाकाम रहा था । घरेलू उद्योग ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वे शुल्क के स्वरूप में संशोधन करें और निम्नलिखित कारणों से शुल्क को निर्धारित स्वरूप में लागू करें :-

- i. उत्पाद के अत्यधिक प्रकार हैं जिनकी काफी अधिक लागत और कीमत है अतः बेंचमार्क स्वरूप की गणना करना निष्फल और निष्प्रवाही है ।
- ii. लागत और कीमत को शासित करने वाले समस्त मापदंडों को प्राधिकारी ने पूर्ववर्ती जांच में स्वीकार नहीं किया है ।
- iii. एक डेनियर की उत्पादन लागत के आधार पर उक्त डेनियर के लिए ही निर्धारित एक बेंचमार्क गुणवत्ता (श्रेणीकरण,)डबलिंग, ट्विस्टिंग, रंगाई, पैकिंग, चमक आदि में अंतर के कारण उक्त उत्पाद प्रकार के लिए बेंचमार्क कीमत प्रदर्शित करने के लिए सर्वथा अपर्याप्त है ।
- iv. डबलिंग, ट्विस्टिंग, पैकिंग, गुणवत्ता (इस उत्पाद में अनुभूत गुणवत्ता मानकों के अनुसार उत्पाद का श्रेणीकरण), रंगाई, चमक आदि जैसे मापदंडों का उत्पाद की लागत और कीमत पर पूरा प्रभाव पड़ता है ।
- v. घरेलू उद्योग के पास उपलब्ध आंकड़ों से यह पता चलता है कि निर्यातक ने केवल दो डेनियरों (120 तथा 150), का निर्यात किया है । इस प्रकार कई डेनियरों में उत्पाद का उत्पादन और बिक्री किए जाने पर अलग बेंचमार्क नहीं दिए जा सकते । निर्दिष्ट प्राधिकारी ने वर्तमान मामले में वस्तुतः 30 से अधिक अलग-अलग उत्पाद प्रकार पाए हैं । यद्यपि, उत्पाद प्रकारों की यह सूची असमापी है जिसकी वजह यह है कि उत्पाद मापदंडों में ये शामिल हैं (i) डेनियर, (ii) गुणवत्ता, (iii) पैकिंग, (iv) रंग, (v) चमक, (vi) डबलिंग (vii) ट्विस्टिंग, (viii) डबलिंग और ट्विस्टिंग (ix) डबलिंग एंड डाइंग, (x) ट्विस्टिंग एंड डाइंग । संभावित कारीगरी और संयोजनों की बड़ी संख्या को ध्यान में रखते हुए बेंचमार्क शुल्क की गणना नहीं की जा सकती और यह अप्रभावी है ।
- vi. घरेलू उद्योग के अनुभव से यह सिद्ध होता है कि बेंचमार्क शुल्क की गणना नहीं की जा सकती और यह अप्रभावी है । शुल्क पाटन रोकने के लक्षित उद्देश्य की पूर्ति करने में विफल रहा है ।
- vii. निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा मध्यावधि समीक्षा में लगाया गया बेंचमार्क शुल्क कच्ची सामग्री की कीमत अर्थात् लुग्दी की कीमत में वृद्धि के कारण अप्रभावी बन गया जिससे विचाराधीन उत्पाद की लागत और कीमत में वृद्धि हुई ।
- viii. उत्पादन लागत में अत्यधिक वृद्धि के मद्देनजर घरेलू उद्योग तथा आयातों की वर्तमान कीमत जांच अवधि के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से काफी अधिक है ।
- ix. निर्दिष्ट प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा और मध्यावधि समीक्षा में शुल्क के स्वरूप में परिवर्तन किया है ।

- x. वस्त्र उत्पादों के पिछले मामलों जिनमें प्राधिकारी ने समीक्षा जांच में शुल्क के स्वरूप में परिवर्तन किया है, सेस्टेट के विभिन्न निर्णयों तथा उपर्युक्त कारणों का हवाला देते हुए घरेलू उद्योग ने शुल्क के स्वरूप में परिवर्तन करने और शुल्क को निर्धारित रूप में लागू करने का अनुरोध किया है ।
- xi. शुल्क की निर्धारित मात्रा के समर्थन में उनके तर्क के प्रति पूर्वाग्रह के बिना घरेलू उद्योग ने यह तर्क दिया है कि यदि निर्दिष्ट प्राधिकारी अभी भी बैचमार्क शुल्क की सिफारिश करते हैं तो बैचमार्क “किसी अन्य डेनियरों” के लिए होना चाहिए ।
- क्षति रहित कीमत अत्यधिक कम है जिससे घरेलू उद्योग को निम्नलिखित कारणों की वजह से अनुचित ढंग से कम संरक्षण मिला है :
- क. प्राधिकारी के लिए वास्तविक कच्ची सामग्री तथा उपयोगिताओं की खपत और क्षति रहित कीमत के निर्धारण हेतु वास्तविक उत्पादन पर विचार करना अपेक्षित है । लागत ईष्टतम नहीं हो सकती है ।
- ख. लगाई गई पूंजी का निर्धारण अचल परिसंपत्तियों के वर्तमान मूल्य पर विचार करते हुए या कम से कम अचल परिसंपत्तियों के सकल मूल्य पर विचार करते हुए किया जाना चाहिए ।
- ग. मै. इंडियन रेयन के लिए क्षति रहित कीमत के निर्धारण की खास तौर पर (i) उत्पाद मिश्रण में परिवर्तनों के साथ उत्पादन में परिवर्तन, (ii) उत्पाद मिश्रण के कारण उपयोगिताओं की अधिक खपत और क्षमता के कम उपयोग को ध्यान में रखते हुए समीक्षा की जानी चाहिए ।
- घ. उत्पाद मिश्रण में परिवर्तनों के कारण उत्पादन में अंतर “उपयोगिताओं या क्षमताओं के अकुशल उपयोग” से भिन्न है । वर्तमान मामले में क्षमता उपयोग या उपयोगिताओं में अंतर पूर्णतः आरोपित उत्पादन अक्षमताओं के कारण हुए हैं । ऐसा मोटे तौर पर उत्पाद मिश्रण में अंतर के कारण हुआ है । इसके अलावा, ऐसी स्थिति में जहां उत्पाद मिश्रण में अंतर और तथाकथित अकुशल उपयोगिता मौजूद होती है, प्राधिकारी को नई क्षति रहित कीमत संबंधी कानून के अनुसार भी इन दोनों कारकों के प्रभाव को अलग करना होगा ।
- ड. घरेलू उद्योग की भारत औसत क्षति रहित कीमत निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त उत्पाद भार वही होना चाहिए जैसा कि घरेलू उद्योग के अलग-अलग घटकों की क्षति रहित कीमत के निर्धारण में प्रयुक्त उत्पादन के मामले में किया गया है ।
- शुल्क अम.डा. में व्यक्त की जाए । पूर्ववर्ती दो मामलों में अम.डा. के रूप में पाटनरोधी शुल्क व्यक्त किया गया है और हितबद्ध पक्षकार ने ऐसा कोई कारण नहीं दिया है कि शुल्क के स्वरूप में परिवर्तन क्यों किया गया है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

- जहां तक उक्त प्रकटन विवरण पर टिप्पणियां देने के लिए प्रदत्त समय का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच को पूरा करने में समय की कमी के कारण अधिक लंबी अवधि प्रदान नहीं की जा सकी। तथापि, प्राधिकारी नोट करते हैं कि वर्तमान मामले में समूची जांच अवधि के दौरान हितबद्ध पक्षकारों को पर्याप्त समय दिया गया था और इस प्रकार इस वजह से उनके साथ कोई भेदभाव नहीं हुआ है।
- जहां तक मै0 सैंचुरी रेयन की सूचना/आंकड़ों को शामिल किए जाने का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उन्होंने अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रदान करने के लिए संबद्ध वस्तु के सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों से अनुरोध किया था। संबद्ध वस्तु का घरेलू उत्पादक होने के नाते मै. सैंचुरी रेयन ने अपेक्षित सूचना/आंकड़े उपलब्ध कराए थे जिन पर इस विषय से संबंधित पाटनरोधी नियमों के अनुसार क्षति विश्लेषण हेतु विचार किया गया था।
- जहां तक शुल्क के स्वरूप का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि विचाराधीन उत्पाद के भीतर खासकर उसके भार और कीमत के संबंध में भारी अंतर है। अतः संदर्भ कीमत या निर्धारित शुल्क के रूप में पाटनरोधी शुल्क इस मामले में उचित नहीं होगा। आगे यह नोट किया जाता है कि हल्के डेनियर ज्यादा महंगे होते हैं। अतः इस मामले के विशिष्ट तथ्यों और गुणदोषों पर विचार करते हुए प्राधिकारी यह मानते हैं कि शुल्क की मूल्यानुसार दर वर्तमान मामले में सर्वाधिक उचित होगी।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि प्राधिकारी के पास केवल अवधि को बढ़ाने की शक्ति है और शुल्क की राशि नहीं बढ़ाई जा सकती, प्राधिकारी अपने इस विचार को दोहराते हैं कि वे इस तर्क से सहमत नहीं हैं और यह मानते हैं कि इस विषय पर संगत नियमों एवं विनियमों के उचित पाटन से प्राधिकारी प्रत्येक मामले के तथ्यों और गुण-दोष के आधार पर शुल्क में भी संशोधन करने की शक्ति रखते हैं।
- जहां तक परिकलित सामान्य मूल्य के निर्धारण और गोपनीयता के मुद्दों का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। जहां तक कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत और उचित लाभ मार्जिन का संबंध है, इनका प्रकटन किया गया है।
- जहां तक क्षति से संबंधित मुद्दों का प्रश्न है, इन पर इस जांच परिणाम के संगत खंड में उचित विचार किया गया है।
- जहां तक चीन जनगण. के लिए परिकलित सामान्य मूल्य की समीक्षा का संबंध है, प्राधिकारी ने रिकॉर्ड में उपलब्ध तथ्यों और अपनी पद्धति के अनुसार सामान्य मूल्य का परिकलन किया है और उसका निर्धारण पुनः कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की खपत के कारक तथा सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत पर विचार करने के बाद किया गया है।
- जहां तक वैट के मददे का संबंध है, इस पर पाटन मार्जिन का निर्धारण करते समय उचित विचार किया गया है।

क्षति रहित कीमत के संबंध में प्राधिकारी ने इसका निर्धारण इस विषय पर संगत पाटनरोधी नियमों और इस मामले के तथ्यों पर विचार करते हुए किया है।

हितबद्ध पक्षकारों के विविध अनुरोध तथा उनकी जांच

मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन, चीन जन.गण. के अनुरोध

5. मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन, चीन जन.गण. ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं

- शुल्क के स्वरूप में परिवर्तन करने के लिए घरेलू उद्योग का दावा : यह तर्क दिया गया है कि शुल्क के स्वरूप में परिवर्तन अथवा शुल्क को बढ़ाने के बारे में घरेलू उद्योग के दावे का उल्लेख न तो जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना और न ही घरेलू उद्योग के आवेदन में किया गया है और इसलिए प्राधिकारी द्वारा ऐसे दावे को मंजूर करना अवैध तथा अननुमत्य होगा । इसके अलावा, इस दावे की अनुमति नहीं दी जा सकती क्योंकि इस मामले की शुरुआत एक स्वतः शुरुआत थी ।
- यह तर्क दिया गया है कि धारा 9क (5) के अंतर्गत प्राधिकारी के पास केवल अवधि को बढ़ाने की शक्ति है और शुल्क की राशि में वृद्धि नहीं की जा सकती । शुल्क की राशि को बढ़ाने की संस्तुति जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना के दायरे से बाहर होगी और यह कानूनी प्राधिकार से रहित होगी । इस संबंध में ऋषिरूप पॉलीमर्स बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी, 2006 (196) ई एल टी 385 (एस सी) में माननीय उच्चतम न्यायालय के निर्णय का हवाला दिया गया है ।
- गोपनीयता: यह दावा किया गया है कि घरेलू उद्योग ने किसी औचित्य अथवा गोपनीयता प्रदान करने के प्राधिकारी के विशिष्ट आदेश के बिना पर्याप्त सूचना को गोपनीय रखा है । दो अलग-अलग कंपनियों की समेकित अलग-अलग सूचना प्रदान की जानी चाहिए थी जिसे गोपनीय नहीं रखा जा सकता था । यहां तक कि सार्वजनिक क्षेत्र में उपलब्ध सूचना (बिक्री मूल्य, अथ एवं इति स्टॉक संबंधित वार्षिक रिपोर्टों में आसानी से उपलब्ध हैं) को गोपनीय रखा गया है ।
- विधिमान्यता इस बात का विरोध किया जाता है कि जिस एसोसिएशन ने घरेलू उद्योग के लिए और उसकी ओर से सूचना दायर की है, उसके पास आवेदन की विषय वस्तु की प्रामाणिकता को सत्यापन करने की कोई शक्ति नहीं है । इसके अलावा, सत्यापन विधिक सत्ताओं से किया जाना चाहिए और न कि प्रभागों अर्थात् इंडियन रेयन, केशोराम रेयन और सेंचुरी रेयन से । एसोसिएशन ने कुछ कंपनियों के लिए चुनिन्दा ढंग से सूचना प्रस्तुत की है और उसके समर्थन में कारणों की एसोसिएशन के उत्तर से पुष्टि नहीं की गई है । ऐसी चुनिन्दा सूचना को स्वीकार नहीं किया जाना चाहिए था । इस तर्क के समर्थन में यह अनुरोध किया गया है कि इंडियन रेयन आदित्य बिडला नूवो की इकाई है जिसका उत्पादन देश में कुल उत्पादन क्षमता का 16,000 मी.ट. (कुल घरेलू क्षमता का 38.45 प्रतिशत) बनता है, और सेंचुरी रेयन तथा केशोराम रेयन सेंचुरी टैक्सटाइल एंड इंडस्ट्री लिमिटेड समूह की कंपनियां हैं । रिकॉर्ड के अनुसार केवल केशोराम रेयन की ओर से उत्तर दायर किया गया है । हालांकि सेंचुरी टैक्सटाइल और इंडस्ट्री लि. समूह की एक कंपनी जिसकी क्षमता केवल 6500 मी.ट. (कुल घरेलू क्षमता का 15.43 प्रतिशत) भाग लेती है । तथापि, 19,000 मी.ट. की क्षमता वाली समूह की अन्य कंपनी (कुल घरेलू क्षमता का 46.42 प्रतिशत) केवल समर्थक है ।
- संबद्ध वस्तु के व्यापार में शामिल संबद्ध पक्षकार की सूचना को प्रस्तुत न करना : यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग से सेंचुरी रेयन के उत्तर को घरेलू उद्योग ने जानबूझकर प्रस्तुत नहीं किया है ।

- यह भी तर्क दिया गया है कि शुल्क की अवधि को बढ़ाने के घरेलू उद्योग के अनुरोध को सरसरी तौर पर पाटनरोधी नियमावली के नियम 6 (8) के अनुसार अस्वीकृत कर दिया जाना चाहिए ।
- यह तर्क दिया गया है कि कड़े पर्यावरणिक नियंत्रण उपायों, जिनकी वजह से एंका एल्सटरवर्ग, जर्मनी जैसी कंपनियां बंद हुई हैं, के कारण वी एफ वाई का उत्पादन परिदृश्य विश्वभर में बदल गया है । परिणामतः यह बताया जाता है कि वी एफ वाई का पर्याप्त उत्पादन आधार एशिया में स्थापित होने की संभावना है जो उत्पादकों को अधिक अवसर दे रहा है ।
- पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना: यह तर्क दिया गया है कि पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का दावा मात्र अनुमानों पर आधारित है । शुल्क की राशि को बढ़ाने की बात को निम्नलिखित आधार पर स्वीकार नहीं किया जा सकता । अत्यधिक उत्पादक क्षमता के मुद्दे पर इंडियन स्पिनर एसो. बनाम निर्दिष्ट प्राधिकारी के मामले का हवाला यह तर्क देते हुए दिया गया है कि बेशी उत्पादन क्षमता की मौजूदगी को क्षति का आसन्नवर्ती खतरा नहीं माना जा सकता । यह तर्क दिया गया है कि संभावना शुल्क की राशि में वृद्धि का कोई आधार नहीं है ।
- घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए शुल्क अपवंचन (कशीदाकारी यार्न की आड में वी एफ वाई का आयात) के मुद्दे के बारे में यह तर्क दिया गया है कि अधिनियम एवं नियमावली के अंतर्गत निर्णायक समीक्षा कार्रवाई में ऐसे दावे की जांच नहीं की जा सकती ।
- घरेलू उद्योग द्वारा उल्लिखित निर्णीत मामले : घरेलू उद्योग द्वारा उल्लिखित निर्णीत मामलों के बारे में यह तर्क दिया गया है कि उपर्युक्त किसी भी निर्णीत मामले से घरेलू उद्योग के मामले को समर्थन नहीं मिलता है ।

सलेम डिस्ट्रिक्ट आर्ट सिल्क मर्चेन्ट्स एसोसिएशन के अनुरोध :

6. एसोसिएशन ने संक्षेप में यह तर्क दिया है कि ऐसे हजारों लघु कुटीर दिवस्टिंग कारखाने हैं जो वर्ष 1950 से दिवस्टिंग, डबल दिवस्टिंग, रंगाई, कशीदाकारी, विस्कोस फिलामेंट यार्न का बड़ी मात्रा में कार्य करने के लिए हजारों श्रमिकों को रोजगार दे रहे हैं और यदि डायड दिवस्टिड, डबल दिवस्टिड कशीदाकृत वी एफ वाई यार्न को आयात की अनुमति दी जाती है तो इन कुटीर उद्योगों में नियोजित हजारों लोग बेरोजगार हो जाएंगे । आगे यह तर्क दिया गया है कि वी एफ वाई — एकल धागा—मूल्यवर्धित का आयात उपभोक्ताओं की जरूरत के लिए किया जा सकता है क्योंकि स्थानी विनिर्माता मांग को पूरा करने में समर्थ नहीं हैं और पाटनरोधी शुल्क वी एफ वाई दिवस्टिड, डबल दिवस्टिड, डायड एवं कशीदाकृत के आयातों पर लगाया जाना चाहिए । यदि इन पर प्रतिबंध नहीं हो तो ताकि लघु उद्योग एवं उनमें नियोजित हजारों श्रमिकों की सुरक्षा की जा सके ।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

7. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिया है :—

मूल जांच में शुल्क बैंचमार्क आधार पर लगाया गया था जो कच्ची सामग्री की कीमत में वृद्धि के कारण पाटन की स्थिति से निपटने में नाकाम रहा है । याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वे शुल्क के

स्वरूप में संशोधन करें और विचाराधीन उत्पाद के अलग-अलग प्रकारों के लिए पृथक बेंकमार्क लागू करें जो ऐसी स्थिति से निपटने में समर्थ होगा जैसा कि मध्यावधि समीक्षा जांच में किया गया है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

8. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा उठाए गए विविध मुद्दों की निम्नानुसार जांच की गई है :

- जहां तक शुल्क के स्वरूप का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसकी सिफारिश प्रत्येक मामले के तथ्यों और गुणदोष के आधार पर की जाती है।
- जहां तक इस तर्क का संबंध है कि प्राधिकारी के पास केवल अवधि बढ़ाने की शक्ति है और शुल्क की राशि नहीं बढ़ाई जा सकती, प्राधिकारी इस मत से सहमत नहीं हैं और वह यह मानते हैं कि इस विषय पर संगत नियमों एवं विनियमों के उचित पाटन से प्राधिकारी प्रत्येक मामले के तथ्यों और गुणदोष के आधार पर शुल्क में भी संशोधन करने में सक्षम हैं।
- जहां तक गोपनीयता का संबंध है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी। संतुष्ट होने के बाद प्राधिकारी ने जहां जरूरी हुआ है, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है। जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था।
- जहां तक घरेलू उद्योग की ओर से या उसके द्वारा सूचना दायर करने के बारे में एसोसिएशन से संबंधित तर्क का प्रश्न है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने सभी ज्ञात घरेलू उत्पादकों से अपेक्षित सूचना/आंकड़े प्रस्तुत करने का अनुरोध किया था ताकि वह उचित क्षति विश्लेषण कर सकें। इसके उत्तर में मै. कैसोराम रेयन, मै. इंडियन रेयन और मै. सैंचुरी रेयन ने सूचना/आंकड़े दायर किए। प्राधिकारी द्वारा सत्यापन के बाद वर्तमान मामले में इनका उपयोग किया गया है।
- जहां तक विश्व भर में वी एफ वाई के बदलते हुए उत्पादन परिदृश्य का संबंध है कि प्राधिकारी नोट करते हैं कि इससे किसी उत्पादक को भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन करने और घरेलू उत्पादकों को क्षति पहुंचाने का लाइसेंस नहीं मिलेगा।
- जहां तक पाटन एवं क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना का संबंध है, इस पर इस प्रकटन विवरण के संबंधित खंडों में उचित विचार किया गया है।
- जहां तक घरेलू उद्योग द्वारा उठाए गए शुल्क अपवंचन के मुद्दे का संबंध है, प्राधिकारी इस बात से सहमत हैं कि इस मुद्दे का निवारण वर्तमान जांच में नहीं किया जा सकता।
- सलेम डिस्ट्रिक्ट आर्ट सिल्क मर्चेन्ट्स एसो. के अनुरोध के संबंध में प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस जांच में विचाराधीन उत्पाद पूर्ववर्ती जांचों में लिए गए निर्णयों के अनुसार अपरिवर्तित रहता है। वर्तमान मामले में प्राधिकारी के लिए यह निर्धारित करना अपेक्षित है कि क्या लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने सकने से पाटन एवं क्षति जारी रहेगी या उसकी पुनरावृत्ति होगी।
- हितबद्ध पक्षकारों के अन्य अनुरोधों पर इस प्रकटन विवरण के संबंधित खंडों में उचित विचार किया गया है।

घ. विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु
घरेलू उद्योग के अनुरोध

9. मूल जांच और वर्तमान जांच में विचाराधीन उत्पाद "150 डेनियरों (और $+4\%$ अनुमत्य परिवर्तन) तक का विस्कोस रेयन फिलामेंट यार्न है जिसे विस्कोस फिलामेंट यार्न या वी एफ वाई, रेयन फिलामेंट यार्न के नाम से भी जाना जाता है ।

10. घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित वस्तु आयातित उत्पाद के समान वस्तु है । भारतीय उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद तथा संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर नहीं है । विचाराधीन उत्पाद तथा समान वस्तु के मुद्दे की जांच निर्दिष्ट प्राधिकारी ने मूल जांच में की थी और यह माना गया है कि आयातित और घरेलू उत्पाद समान वस्तु हैं ।

11. वर्तमान समीक्षा जांच एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के कारण विचाराधीन उत्पाद वही रहता है जैसा कि पूर्ववर्ती जांचों में परिभाषित किया गया है ।

मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन, चीन जन.गण. के अनुरोध

मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन, चीन जन.गण. ने संक्षेप में यह अनुरोध किया है कि परिष्कृत यार्न का विनिर्माण घरेलू उद्योग नहीं करता है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

12. मूल जांच में शामिल उत्पाद 150 डेनियरों (और $+4\%$ अनुमत्य परिवर्तन) तक का विस्कोस रेयन फिलामेंट यार्न है जिसमें 67 डेसीटेक्स से कम का मोनो फिलामेंट यार्न शामिल है जिसे विस्कोस फिलामेंट यार्न या वी एफ वाई, रेयन फिलामेंट यार्न, आर्ट सिल्क यार्न, सेल्युलोज यार्न या रेयन यार्न कहा जाता है और जिससे डायड यार्न, फ्लैट यार्न, माइक्रो फिलामेंट माइक्रो यार्न, स्विस् किड यार्न (किन्तु जिसमें कशीदाकारी यार्न शामिल नहीं है) वी एफ वाई का द्विगणित/बहुगणित प्लाई यार्न आदि तब तक शामिल हैं जब तक कि उसे इस पैराग्राफ में विशिष्ट रूप से शामिल न किया जाए (जिसे आगे संबद्ध वस्तु भी कहा गया है) । तथापि, संबद्ध वस्तु में सिलाई धागा, फर यार्न, अग्निरोधी यार्न, अभियांत्रिक यार्न, कशीदाकारी यार्न एवं वात विन्यासित यार्न शामिल नहीं हैं । इस समीक्षा के प्रयोजनार्थ विचाराधीन उत्पाद वही रहता है जैसा कि मूल जांच में है ।

13. संबद्ध वस्तु उपशीर्ष 54033100, 54033200, 54033300, 54034110, 54034120, 54034130, 54034140, 54034150, 54034160, 54034170, 54034180, और 54034190 के अंतर्गत वर्गीकृत है यद्यपि उनके बारे में अन्य अध्याय शीर्षों (यथा अध्याय 55) के भीतर भी अयात किए जाने की सूचना दी गई है । अतः सीमाशुल्क वर्गीकरण केवल सांकेतिक हैं और वर्तमान जांच के दायरे पर किसी भी रूप में बाध्यकारी नहीं है ।

14. प्राधिकारी नोट करते हैं कि घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित और आयातित उत्पाद समान वस्तुएं हैं । घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित विचाराधीन उत्पाद और संबद्ध देश से निर्यातित संबद्ध वस्तु में कोई ज्ञात अंतर

नहीं है। जहाँ तक इस तर्क का संबंध है कि घरेलू उद्योग द्वारा परिष्कृत यार्न का विनिर्माण नहीं किया जाता है, प्राधिकारी नोट करते हैं कि इस तर्क की पुष्टि नहीं की गई है। इसके अलावा, इस विषय पर संगत नियमों एवं विनियमों के अनुसार घरेलू उद्योग केवल "समान वस्तु" का उत्पादन करने के लिए जिम्मेवार है, जो वह उत्पादन कर रहा है। किसी अपवर्जन के बारे में किसी दावे की विशिष्ट पुष्टि की जानी चाहिए।

घ. घरेलू उद्योग का क्षेत्र

घरेलू उद्योग के अनुरोध

15. वर्तमान जांच प्राधिकारी ने स्वतः शुरु की है। याचिकाकर्ता वर्तमान याचिका दायर करने के आधार की अपेक्षा की पूर्ति करते हैं। इसके अलावा, याचिकाकर्ता पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" हैं। तथापि, यह एक निर्णायक समीक्षा जांच होने के कारण पाटनरोधी नियमों के अंतर्गत आधार की जांच करने की कोई जरूरत नहीं है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

16. पाटनरोधी नियमावली के नियम 2 (ख) में निम्नानुसार उपबंध है :-

"घरेलू उद्योग" का तात्पर्य ऐसे समग्र घरेलू उत्पादकों से है जो समान वस्तु के विनिर्माण और उससे जुड़े किसी कार्यकलाप में संलग्न हैं अथवा उन उत्पादकों से है जिनका उक्त वस्तु का सामूहिक उत्पादन उक्त वस्तु के कुल घरेलू उत्पादन का एक बड़ा हिस्सा बनता है, परंतु जब ऐसे उत्पादक आरोपित पाटित वस्तु के निर्यातकों या आयातकों से संबंधित होते हैं या वे स्वयं उसके आयातक होते हैं तो ऐसे मामले में ऐसे उत्पादकों को घरेलू उद्योग का भाग नहीं माना जाएगा।

17. वर्तमान समीक्षा जांच स्वतः आधार पर शुरु की गई है। मै. कैशोराम रेयन, मै. इंडियन रेयन ने जांच शुरुआत संबंधी अधिसूचना का उत्तर दिया है। बाद में क्षति विश्लेषण करने के लिए मै. सैंचुरी रेयन ने भी अपेक्षित सूचना/आंकड़े दायर किए। रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार मै. कैशोराम रेयन, मै. इंडियन रेयन तथा मै. सैंचुरी रेयन का उत्पादन भारत में संबद्ध वस्तु के उत्पादन का एक बड़ा भाग बनता है। अतः संबद्ध वस्तु के ये भारतीय उत्पादक पाटनरोधी नियमों के अर्थ के भीतर "घरेलू उद्योग" की अपेक्षा को पूरा करते हैं।

च. पाटन का निर्धारण

घरेलू उद्योग के अनुरोध

18. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :

(क) यीबिन हायस्ट फाइबर लि. कार्पो. के बाजार अर्थव्यवस्था के व्यवहार के दावे को राज्य की स्वामित्व वाली कंपनी होने के कारण अस्वीकृत किया जाना चाहिए।

- (ख) यीबिन हायस्ट फाइबर लि. कार्पो. को अलग पाटन मार्जिन तथा अलग शुल्क प्रदान नहीं किया जाना चाहिए क्योंकि समग्र ग्रुप ने उत्तर नहीं दिया है और इसलिए संबंधित कंपनी के उत्तर को अस्वीकृत करने की जरूरत है ।
- (ग) उन्होंने सामान्य मूल्य के निर्धारण हेतु भारत को बाजार अर्थव्यवस्था वाले देश के रूप में माना है । भारत चीन के उत्पादकों के लिए एक उचित प्रतिनिधिक देश है । चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत, उद्योग के खपत मानकों, परिवर्तन लागत, बिक्री के अनुमानों, सामान्य एवं प्रशासनिक व्यय तथा उचित लाभ मार्जिन के आधार पर सामान्य मूल्य का परिकलन करने की जरूरत है ।
- (घ) निर्धारित सामान्य मूल्य तथा निर्यात कीमत पर विचार करते हुए पी सी एन वार पाटन मार्जिन की गणना की गई है । यह देखा जाएगा कि पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु काफी ज्यादा भी है ।

अन्य हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोध

19. "पाटन के निर्धारण" के बारे में किसी अन्य हितबद्ध पक्षकार ने कोई अनुरोध नहीं किया है ।

सामान्य मूल्य

20. प्राधिकारी ने संबद्ध देश के ज्ञात निर्यातकों/उत्पादकों को निर्धारित प्रपत्र में और ढंग से सूचना प्रदान करने की सलाह देते हुए उन्हें प्रश्नावलियां भेजीं । इसके उत्तर में केवल चीन जन. गण. के उत्पादक एवं निर्यातक मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लि. कार्पो. ने प्रश्नावली का उत्तर दायर कर इस जांच में सहयोग किया है ।
21. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पिछले तीन वर्षों में भारत और डब्ल्यू टी ओ के अन्य सदस्यों द्वारा पाटनरोधी जांचों में चीन जन गण को गैर बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है । चीन जन.गण. को गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाला देश माना गया है जो पाटनरोधी नियमों के अनुसार निर्यातक देश या अलग-अलग निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा उपर्युक्त अनुमान के खंडन के अधीन है ।
22. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध 1 के पैराग्राफ 8 के अनुसार गैर-बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का उस स्थिति में खंडन किया जा सकता है यदि चीन के निर्यातक (निर्यातकों) द्वारा पैराग्राफ 8 के उप पैरा(3) में विनिर्दिष्ट मानदंडों के आधार पर सूचना और पर्याप्त साक्ष्य उपलब्ध कराते हैं और उसके विपरीत सिद्ध करते हैं । चीन जन.गण. के संबद्ध वस्तु के निर्यातकों/उत्पादकों के लिए बाजार अर्थव्यवस्था संबंधी व्यवहार विषयक प्रश्नावली के उत्तर में पैरा 8 के उप पैरा (3) में उल्लिखित आवश्यक सूचना/पर्याप्त साक्ष्य प्रस्तुत करना अपेक्षित है ताकि निर्दिष्ट प्राधिकारी निम्नलिखित मापदंडों पर विचार कर सकें कि क्या :-

- कच्ची सामग्रियों सहित कीमत; लागत और निविष्टि तथा श्रम लागत, उत्पादन, बिक्रियां और निवेश के बारे में चीन जन.गण. में संबंधित फर्मों का निर्णय ऐसे बाजारी संकेतों के अनुसार

किया जाता है जिसमें आपूर्ति और मांग परिलक्षित होती है और इस बारे में राज्य का अधिक हस्तक्षेप नहीं होता है और क्या प्रमुख निविष्टियों की लागत में बाजार मूल्य पर्याप्त रूप से प्रदर्शित होते हैं;

- इस प्रकार की फर्मों की उत्पादन लागत और वित्तीय स्थिति विशेषकर परिसंपत्तियों के मूल्यहास, अन्य बड़े खातों, वस्तु विनिमय-व्यापार और ऋणों की प्रतिपूर्ति के माध्यम से भुगतान के संदर्भ में पूर्ववर्ती गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाली प्रणाली से हुई महत्वपूर्ण विकृतियों के अध्यधीन हैं;
- इस प्रकार की फर्में दिवालियापन और संपत्ति कानूनों के अध्यधीन हैं जो फर्मों के प्रचालन की कानूनी निश्चितता और स्थिरता की गारंटी देते हैं; और
- विनिमय दर का परिवर्तन ब्याज की दर पर किया जाता है ।

23. प्राधिकारी नोट करते हैं कि प्राधिकारी द्वारा जारी जांच शुरूआत संबंधी सूचना के बाद चीन के उत्पादक/निर्यातक मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लि. कार्पो.ने बाजार अर्थव्यवस्था की प्रश्नावली के उत्तर सहित प्रश्नावलियों का उत्तर प्रस्तुत किया है और गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान के खंडन की मांग की है । तथापि, चीन की कंपनी के परिसरों में मौके पर जांच के दौरान कंपनी एम ई टी दावे की पुष्टि करने में समर्थ नहीं रही और इसलिए उसे छोड़ने का निर्णय लिया गया । प्रश्नावली के उत्तर का अवलोकन किया गया जिसमें अन्य बातों के साथ-साथ यह बताया गया था कि घरेलू बाजार में बेची गई वस्तु तथा भारत को निर्यातित वस्तु लगभग एक समान है ।

चीन जन.गण. के निर्यातकों/उत्पादकों के संबंध में सामान्य मूल्य का निर्धारण

24. चूंकि चीन जन.गण. का एकमात्र सहयोगी निर्यातक/उत्पादक एम ई टी अनुमान का खंडन करने में समर्थ नहीं रहा है और इसके बजाए उसने अपने एम ई टी दावे को छोड़ने का विकल्प चुना है तथा चीन के किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने प्रश्नावली का उत्तर नहीं दिया है और एम ई टी अनुमान का खंडन नहीं किया है । इसलिए प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के आधार पर चीन जन.गण. में सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है ।

25. इस संबंध में नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 में उपबंधित है कि:

गैर-बाजार अर्थव्यवस्था वाले देशों से आयातों के मामले में सामान्य मूल्य का निर्धारण बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश की कीमत अथवा संरचित मूल्य, अथवा किसी तीसरे देश से भारत सहित अन्य देशों के लिए कीमत अथवा जहां यह संभव न हो, अथवा अन्य किसी समुचित आधार पर किया जाएगा, जिसमें भारत में समान वस्तु के लिए वास्तविक रूप से संदत्त अथवा भुगतान योग्य कीमत, जिसमें यदि आवश्यक हो तो लाभ की समुचित गुंजाइश भी शामिल की जाएगी । निर्दिष्ट प्राधिकारी द्वारा बाजार अर्थव्यवस्था वाले किसी तीसरे समुचित देश का चयन उचित तरीके से किया जाएगा जिसमें संबंधित देश के विकास के स्तर तथा प्रश्नगत उत्पाद का ध्यान रखा जाएगा और चयन के

समय उपलब्ध कराई गई किसी विश्वसनीय सूचना का भी ध्यान रखा जाएगा। जहां उचित हो उचित समयसीमा के भीतर किसी अन्य बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के संबंध में इसी प्रकार के मामले में की गई जांच पर भी ध्यान दिया जाएगा। जांच से संबंधित पक्षों को बाजार अर्थव्यवस्था वाले तीसरे देश के उपर्युक्त प्रकार से चयन के बारे में बिना किसी अनुचित विलंब के सूचित किया जाएगा और उन्हें अपनी टिप्पणियां देने के लिए उचित अवधि प्रदान की जाएगी।

26. चूंकि पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 8 (2) में निहित गैर बाजार अर्थव्यवस्था के अनुमान का खंडन नहीं किया गया है अतः प्राधिकारी ने पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा 7 के अनुसार सामान्य मूल्य का निर्धारण किया है। पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-1 के पैरा-7 में निर्धारित अन्य पद्धतियों के बारे में रिकॉर्ड में पर्याप्त सूचना न होने के कारण प्राधिकारी ने "किसी अन्य उचित आधार" की पद्धति अपनाकर सामान्य मूल्य निर्धारित किया है।

27. अतः प्राधिकारी ने कॉस्ट लुग्दी, कॉस्टिक सोडा और कार्बन डाई सल्फाइड जैसी प्रमुख कच्ची सामग्री की अंतर्राष्ट्रीय कीमत कमशः 50.12 रूपए, 10.35 रूपए और 26.71 रूपए प्रति किग्रा. मानते हुए, सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की खपत के कारक तथा सर्वाधिक कुशल घरेलू उद्योग की परिवर्तन लागत पर विचार करते हुए चीन जन.गण. के लिए सामान्य मूल्य परिकलित किया है। इसके अलावा, 5 प्रतिशत का उचित लाभ मार्जिन स्वीकार किया गया है। इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य *** अम.डा./किग्रा. बनता है।

निर्यात कीमत

मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन

28. प्राधिकारी नोट करते हैं कि चीन के एकमात्र उत्पादक/निर्यातक अर्थात् मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन ने प्रश्नावली का उत्तर दायर किया है। उत्तर के अवलोकन के बाद कंपनी को अपूर्णता पत्र भेजा था। यह अनुरोध किया गया था कि कंपनी ने कुछ समायोजनों को "अन्य समायोजन" शीर्ष में समायोजित किया है और इसीलिए उसे सलाह दी गई थी कि वह इसे अलग करें और संशोधित परिशिष्ट-2 में प्रदर्शित करें। कंपनी ने यह स्पष्ट किया कि उन्होंने वायदा कारोबारियों, सी.शु. निकासी, छूट शुल्क और प्रतिभूति शुल्क के व्यय को क्लब किया है। तदनुसार कंपनी ने इन समायोजनों को अलग करते हुए संशोधित परिशिष्ट-2 प्रस्तुत की। यह नोट किया गया है कि जांच अवधि के दौरान कंपनी ने भारत को *** मी.ट. संबद्ध वस्तु का निर्यात किया है। अंतरदेशीय भाड़े, विदेशी भाड़े, समुद्री बीमा, वायदा व्यय, सी.शु. निकासी, पत्तन व्यय एवं प्रलेखन शुल्क, प्रतिभूति व्यय एवं बैंक प्रभारों के लिए समायोजनों का दावा किया गया है। मौके पर सत्यापन के दौरान यह नोट किया गया था कि इस तथ्य के बावजूद कि कंपनी द्वारा ऋण अपने क्रेताओं को दिए गए थे, ऋण लागत हेतु कोई समायोजन नहीं किया गया था। अतः ऋण लागत का भी समायोजन किया गया है। जहां तक अन्य समायोजनों का संबंध है, उनका सत्यापन मौके पर सत्यापन के दौरान किया गया है और उन्हें स्वीकार किया गया है, जिनकी अनुमति दी गई है। इस प्रकार निकाली गई निवल निर्यात कीमत *** अम.डा./किग्रा. बनती है।

असहयोगी उत्पादक/निर्यातक

29. चूंकि किसी अन्य निर्यातक/उत्पादक ने ऐसी कोई सूचना प्रदान नहीं की है जिसे निर्यात कीमत के निर्धारण हेतु प्रयोग किया जा सके। इसलिए प्राधिकारी ने रिकॉर्ड में "उपलब्ध तथ्यों" के आधार पर "निर्यात कीमत" का निर्धारण किया है।

छ. पाटन मार्जिन

30. कारखाना स्तर पर इस प्रकार निर्धारित सामान्य मूल्य और निर्यात कीमत के आधार पर चीन जन गण के सभी निर्यातकों/उत्पादकों के लिए जांच अवधि के दौरान पाटन मार्जिन का निर्धारण निम्नानुसार किया गया है :-

निर्यातक/उत्पादक	देश	पाटन मार्जिन (अम.डा./किग्रा.)	पाटन मार्जिन
मै. यीबिन हीस्ट फाइबर लिमिटेड कारपोरेशन	चीन जन.गण.	***	2%-12%
अन्य कोई	चीन जन.गण.	***	10%-20%

ज. पाटन का जारी रहना या उसकी पुनरावृत्ति होनाघरेलू उद्योग के अनुरोध

31. घरेलू उद्योग के अनुरोध निम्नानुसार हैं :-

- (क) उत्पाद के बारे में सभी पूर्ववर्ती जांचों और वर्तमान जांच में निर्धारित पाटन मार्जिन न केवल न्यूनतम सीमा से अधिक है अपितु काफी ज्यादा है।
- (ख) मूल जांच से पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद चीन जन.गण. से आयातों की मात्रा में भारी वृद्धि हुई है।
- (ग) चीन जन.गण. में विदेशी उत्पादकों के पास मुक्त रूप से निपटान योग्य वर्तमान तथा भावी क्षमताएं मौजूद हैं।
- (घ) मौजूदा पाटनरोधी शुल्क के बाद भी चीन जन.गण. से हुए आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में कटौती हो रही है।
- (ङ) विश्व के लिए चीन के वर्तमान निर्यात भारत में सकल मांग से काफी अधिक हैं। इसका तात्पर्य यह है कि चीन जन.गण. के पास स्वतंत्र रूप से भारत में संबंधित उत्पाद की समग्र मांग को पूरा करने की क्षमता है।
- (च) विचाराधीन उत्पाद के लिए भारतीय बाजार अत्यधिक कीमत संवेदी है। ऐसा मामला होने के कारण बाजार में चीन जन.गण. से ऐसे कम कीमत के आयातों की उपलब्धता के कारण निश्चित तौर पर घरेलू उद्योग पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
- (छ) पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बावजूद संबद्ध देश का भारतीय बाजार में पर्याप्त बाजार हिस्सा है।

- (ज) अपने घरेलू बाजार में मांग को पूरा करने और साथ ही साथ बड़ी मात्रा में उसका निर्यात करने हेतु चीन में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की पर्याप्त क्षमता मौजूद है ।
- (झ) विश्व के लिए चीन से विचाराधीन उत्पाद की निर्यात बिक्री काफी अधिक है ।
- (ट) चूंकि चीन जन.गण. में वी एफ वाई के कई उत्पादक कशीदाकारी यार्न का भी विनिर्माण करते हैं, इसलिए इन उत्पादकों ने कशीदाकारी यार्न के नाम पर वी एफ वाई का निर्यात शुरू किया है ताकि वी एफ वाई के आयात पर लगाए गए पाटनरोधी शुल्क के भुगतान से बचा जा सके ।

32. पाटन का जारी रहना

- यह तर्क दिया गया है कि ऐसी स्थिति में जहां किसी संबद्ध देश से पाटित कीमत पर निर्यात जारी है और इनके जारी रहने की संभावना है और यदि भारत को निर्यात पाटित कीमत पर नहीं किए जाते हैं तो आगे इस बात की जांच की जाए कि क्या तीसरे देशों को निर्यात पाटित कीमतों पर किए गए हैं । इसके अलावा, निर्यात कीमत के औचित्य और विश्वसनीयता का भी निर्धारण किया जाए । यदि भारत को निर्यात पाटित कीमतों पर किए गए हैं तो इस बात की संभावना है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में निर्यातक पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु का निर्यात जारी रखेंगे ।
- वर्तमान मामले में चीन जन.गण. के निर्यातक और उत्पादक पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद भी पाटित कीमतों पर संबद्ध वस्तु का निर्यात कर रहे हैं । अतः इस बात की उचित शंका है कि वर्तमान मामले में पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में चीन जन.गण. से बड़ी हुई मात्रा में पाटन की गति बढ़ा दी जाएगी ।
- घरेलू उद्योग ने आगे यह तर्क दिया है कि संबद्ध देश से भारत में आयात और वह भी बढ़े हुए स्तर पर जारी हैं । इस तथ्य के आधार पर भावी पाटन की संभावना का पता नहीं लगाया जा सकता कि संबद्ध देश से आयात अभी भी पाटित कीमत पर हो रहे हैं जिससे अत्यधिक पाटन हो रहा है और कीमत में कटौती हो रही है । इस बात का विश्वास करना उचित है कि वर्तमान शुल्क समाप्त किए जाने के बाद संबद्ध देश के निर्यातक/उत्पादक संबद्ध वस्तु के निर्यात में वृद्धि करेंगे और घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचाएंगे । अतः लागू वर्तमान शुल्क समाप्त किए जाने से भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु का अत्यधिक पाटन होने की संभावना है ।

33. भारतीय बाजार का कीमत आकर्षण

- आगे यह तर्क दिया गया है कि चीन जन.गण. से भारत को संबद्ध वस्तु का निर्यात उस कीमत पर किया जा रहा है जो घरेलू उद्योग की निवल बिक्री कीमत से काफी कम है । अतः लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आगे और आयात होने की संभावना है ।

34. चीन जन.गण. में अनुरक्षित अत्यधिक अप्रयुक्त उत्पादक क्षमताएं

- यह तर्क दिया गया है कि चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की अत्यधिक अप्रयुक्त क्षमताएं मौजूद हैं । चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की मांग और चीन जन.गण. की क्षमता की तुलना करते हुए यह तर्क दिया गया है कि चीन जन.गण. के पास संबद्ध वस्तु की अत्यधिक भारतीय मांग को पूरा

करने के लिए पर्याप्त अप्रयुक्त तथा बेशी क्षमता मौजूद है । संबद्ध वस्तु की चीन की एसोसिएशन की वेबसाइट के प्रिंटआउट को चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की अप्रयुक्त क्षमता को दर्शाते हुए साक्ष्य के रूप में संलग्न किया गया है । अतः इस बात की प्रबल संभावना है कि चीन जन.गण. के निर्यातक और उत्पादक शुल्क समाप्त किए जाने के बाद ही पाटन को तेज कर देंगे ।

चीन में विस्कोस फिलामेंट यार्न की मांग (इकाई:केटी)					
वर्ष	2007	2008	2009	2010	2011
क्षमता	218.5	218.5	218.5	218.5	218.5
उत्पादन	219.4	165.8	190	197	172
क्षमता उपयोग	100%	76%	87%	90%	79%
क्षमता उपयोग	(0.90)	52.70	28.50	21.50	46.50
आयात मूल्य	3.2	2.4	6.7	6.8	5.2
निर्यात कीमत	69.7	45.9	69.5	86.7	77.5
टवास्तविक मांग	152.9	122.3	127.2	117.1	99.7
बेशी क्षमताएं	65.6	96.2	91.3	101.4	118.8

- यह तर्क दिया गया है कि संबंधित उत्पाद के वर्तमान आयात स्तर में चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु की अप्रयुक्त क्षमता और मांग में कमी के कारण अत्यधिक वृद्धि होने की संभावना है । इसके अलावा यह तर्क दिया गया है कि संबद्ध देश से पाटित कीमत पर आयात में और अधिक वृद्धि होने से उपाय समाप्त किए जाने की स्थिति में घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

35. बंद इकाई यह नोट करना प्रासंगिक है कि बडौदा रेयन एवं एन आर सी जिनकी क्षमता क्रमशः 4500 मी.ट. और 16,000 मी.ट. थी, को वर्ष 2008 में बंद कर दिया गया था । उक्त अवधि में बाजार में आ रहे चीन के आयातों ने इस बंदी के कारण उत्पन्न हुए अंतराल को पाट दिया था ।

क्र.सं.	विवरण	मी.ट.
1	कुल क्षमता	62000
2	बंद इकाई क्षमता	20500
3	पाटन मार्जिन की वर्तमान क्षमता	41500

36. आगे यह तर्क दिया गया है कि मांग और आयातों में अब लगातार हो रही वृद्धि के कारण घरेलू उद्योग के पास निम्नलिखित दो विकल्प रह गए हैं :

- घरेलू उद्योग ने निवल बिक्री प्राप्ति को पहुंच मूल्य के बराबर किया— निम्नलिखित विश्लेषण से घरेलू उद्योग द्वारा पहुंच मूल्य के बराबर कीमत पर बिक्री करने पर घरेलू उद्योग पर पड़ने वाले प्रभाव का पता चलता है ।

क्र.स.	विवरण	इकाई	जांच अवधि	पहुंच मूल्य के बराबर निवल बिक्री प्राप्ति होने पर
1	मात्रा	मी.ट.	23,816	23,816
2	बिक्री कीमत	रू./किग्रा.	***	***
		सूचीबद्ध	100	92
3	बिक्री की लागत	रू./किग्रा.	***	***
			100	100
4	लाभप्रदता	रू./किग्रा.	***	***
			100	28
5	लाभ	लाख रुपए	***	***
			100	28
6	नकद लाभ	लाख रुपए	***	***
			100	39
7	पी बी आई टी	लाख रुपए	***	***
			100	37
8	नियोजित पूंजी	लाख रुपए	***	***
			100	100
9	आर ओ आई	%	***	***

यह तर्क दिया गया है कि यदि घरेलू उद्योग अपनी कीमत पहुंच कीमत के बराबर करता है तो लाभप्रदता में भारी कमी जा जाएगी । इसके अलावा, घरेलू उद्योग के नकद लाभ और निवेश पर आय में भी अत्यधिक गिरावट आएगी ।

- घरेलू उद्योग अपनी बिक्री कीमत बनाए रखे — पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने पर आयातों में आगे और वृद्धि होगी तथा अधिक पाटन होगा । यदि घरेलू उद्योग अपनी कीमत बनाए रखता है तो उपभोक्ता चीन की वस्तुओं की ओर रुख करेंगे क्योंकि वे सस्ती होती हैं । इससे घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट आएगी और परिणामतः बिक्री, उत्पादन और क्षमता उपयोग में कमी आएगी जिससे घरेलू उद्योग को क्षति होगी । संभावित प्रभाव निम्नलिखित से देखा जा सकता है :

विवरण	मी.ट.
चीन में सरप्लस क्षमता	118,800
भारत में मांग	34414
घरेलू उद्योग की बिक्री	शून्य

- अतः यह देखा जा सकेगा कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन और क्षति होने की संभावना है ।

मै. यीबिन हाइस्ट फाइबर लिमिटेड कारपोरेशन के अनुरोध

37. मै. यीबिन हाइस्ट फाइबर लिमिटेड कारपोरेशन ने संक्षेप में निम्नलिखित तर्क दिए हैं :-

- (क) प्रतिवादी उद्योग को पाटन एवं क्षति की संभावना का दावा मात्र अनुमानों पर आधारित है ।
- (ख) तीसरे देश में पाटन कानून में विधिमान्य आधार नहीं है ।
- (ग) निर्यातक की मात्र बेसी क्षमता से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जा सकता कि वास्तविक क्षति का आसन्नवर्ती खतरा है ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

38. संगत उपबंधों के अनुसार निर्णायक समीक्षा जांच में निम्नलिखित पहलुओं की जांच अपेक्षित है ।

- क्या पाटन जारी है और यदि हां, तो क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में उसके जारी रहने की संभावना है ।
- यदि पाटन जारी नहीं है तो क्या पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन की पुनरावृत्ति होगी ।

39. पाटनरोधी नियमावली में किसी निर्णायक समीक्षा जांच में पाटन की संभावना की जांच करने की कोई विशिष्ट कार्यप्रणाली निर्धारित नहीं है । तथापि, यदि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु के निर्यात के संबंध में अत्यधिक सकारात्मक पाटन मार्जिन है तो इस बात की संभावना है कि जब तक तथ्यों से अन्यथा पता न चले तब तक पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन जारी रहेगा । तथापि यदि जांच अवधि के दौरान संबद्ध वस्तु का कोई निर्यात नहीं हुआ है तो इसका तात्पर्य यह होगा कि लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन की पुनरावृत्ति होने की संभावना है । ऐसे मामलों में अन्य संगत कारकों की जांच अपेक्षित होती है उदाहरणार्थ पाटन की मात्रा के बारे में ऐसा कोई साक्ष्य जिसका निर्धारण तीसरे देश के बाजारों में संबद्ध वस्तु के निर्यात पर विचार करते हुए किया जा सके ।

40. वर्तमान मामले में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देशों से संबद्ध वस्तु का आयात भारी मात्रा में हुआ है । वस्तुतः क्षति अवधि में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु की मात्रा में वृद्धि हो रही है । यह नोट किया जाता है कि इन वस्तुओं का निर्यात पाटित कीमतों पर किया गया है जिससे घरेलू उद्योग की कीमत में भारी कटौती हो रही है । यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्ति की अनुमति दी जाती है तो पाटित कीमत पर संबद्ध वस्तु की मात्रा में वृद्धि होने की संभावना है । चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु के उत्पादन की अप्रयुक्त क्षमताओं और चीन जन. गण. में संबद्ध वस्तु की भटकी हुई मांग को देखते हुए इसमें और तेजी आने की संभावना है जिसका किसी हितबद्ध पक्षकार ने खंडन नहीं किया है ।

41. उपर्युक्त को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध वस्तु का पाटन जारी रहने की संभावना है । इसके अलावा, पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से संबद्ध देश से पाटित कीमत पर संबद्ध वस्तु के आयात की मात्रा में वृद्धि होने की संभावना है ।

झ क्षति

मै. यीबिन हाइस्ट फाइबर लिमिटेड कारपोरेशन, चीन जन.गण. के अनुरोध

42. मै. यीबिन हाइस्ट फाइबर लिमिटेड कारपोरेशन, चीन जन.गण. ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं.—

- क्षति के सभी कारकों में सुधार: यह तर्क दिया गया है कि घरेलू उद्योग द्वारा दायर अधूरी सूचना के अनुसार भी क्षति के सभी कारकों में पर्याप्त सुधार प्रदर्शित हो रहा है, वर्तमान या संभावित क्षति का कोई मामला नहीं है जिसकी पुनः पुष्टि इस तथ्य से होती है कि घरेलू उद्योग ने अपने उत्तर में कम कीमत पर बिक्री का दावा ही नहीं किया है। जांच अवधि के दौरान क्षति मापदंडों के विश्लेषण से निम्नानुसार पता चलेगा :

क. संबद्ध वस्तु की मांग में आधार वर्ष से लेकर 27 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। निर्यातक के अनुसार इससे यह पता चलता है कि मांग में घरेलू उद्योग के दावे के अनुसार वृद्धि नहीं हुई है।

ख. आधार वर्ष की तुलना में चीन जन.गण. से मांग में बाजार हिस्से में वृद्धि (20 प्रतिशत) हुई है परंतु ऐसा मांग में वृद्धि और घरेलू उत्पादकों के पास शेष बची मात्रा के कारण हुआ है। घरेलू उद्योग मांग के अनुपात में अपनी क्षमता नहीं बढ़ा सका जो 100 प्रतिशत से अधिक क्षमता उपयोग पर कार्य करता है। आयात नई तथा अतिरिक्त मांग को पूरा करने के लिए अनिवार्य है। वर्तमान मामले में बाजार हिस्से में गिरावट या वृद्धि का प्रश्न नहीं उठता क्योंकि मांग में वृद्धि और आयात मात्रा में वृद्धि लगभग समान है।

ग. कीमत कटौती तथा कम कीमत पर बिक्री क्षति के कारक नहीं हैं। इसके समर्थन में पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-11 पर भरोसा किया जाता है। चीन जन.गण. से हाइड्रोफ्लोरिक एसिड के मामले का हवाला दिया गया है।

घ. बिक्री कीमत में वर्ष 2009-10 तक वृद्धि होती रही जो पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान उसी स्तर पर बनी रही। अतः बिक्री कीमत में गिरावट के कारण क्षति की संभावना का दावा नहीं किया जा सकता। बिक्री कीमत और लागत के विश्लेषण से स्पष्ट तौर पर यह सिद्ध होता है कि घरेलू उद्योग अपनी लाभप्रदता में भारी वृद्धि करने में समर्थ हुआ है। निर्यातक के अनुसार घरेलू उद्योग की बिक्री मात्रा सर्वर्धित क्षमताओं के अभाव में कमोवेश समान रही है।

ड. लाभप्रदता के लिए घरेलू उद्योग ने दो आंकड़े अर्थात् लाभ एवं पी बी आई टी उपलब्ध कराए हैं जिनसे भी किसी क्षति का पता नहीं चलता है।

घरेलू उद्योग के अनुरोध

43. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार अनुरोध किए हैं :—

- (क) समूची क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है।
- (ख) समूची क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के आयात में वर्ष 2009-10 में भारी वृद्धि हुई और तत्पश्चात् जांच अवधि में वृद्धि हुई। तथापि, जांच अवधि में तीसरे देशों से आयात में गिरावट आई।

- (ग) पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के बावजूद आयात में समग्र मात्रा में वृद्धि हुई है ।
- (घ) आयात में वृद्धि भारत में उत्पादन एवं उत्पाद की खपत की तुलना में काफी अधिक हुई है ।
- (ङ) भारत में मांग/खपत की तुलना में आयातों का हिस्सा काफी अधिक रहा है ।
- (च) चीन से आयात की अत्यधिक मात्रा भारत में पर्याप्त क्षमताओं एवं उत्पादन के बावजूद रही है ।
- (छ) समूची क्षति अवधि के दौरान कुल आयातों में चीन के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई है और इसका हिस्सा जांच अवधि में कुल आयातों का 83 प्रतिशत रहा है जबकि समूची क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों के हिस्से में गिरावट आई है ।
- (ज) वर्तमान पाटनरोधी शुल्क लागू होने के बाद भी संबद्ध देश से आयातों के कारण घरेलू कीमत में कटौती हो रही है ।
- (झ) समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के उत्पादन में गिरावट आई और जांच अवधि में यह गिरावट काफी अधिक थी ।
- (ट) घरेलू उद्योग की क्षमता उपयोग में भी उत्पादन के समान प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है ।
- (ठ) समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की बिक्री में गिरावट आई ।
- (ड) समूची क्षति अवधि के दौरान मांग में चीन के उत्पादकों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई जबकि क्षति अवधि में घरेलू उद्योग के हिस्से में अत्यधिक गिरावट आई ।
- (ढ) घरेलू उद्योग के लाभ में 2009-10 तक वृद्धि हुई । तथापि, जांच अवधि में गिरावट आई ।
- (ण) निवेश पर आय एवं नकद लाभ में लाभप्रदता के समान प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई है । घरेलू उद्योग के निवेश पर आय एवं नकद लाभ में 2009-10 तक वृद्धि हुई । लेकिन जांच अवधि में इसमें गिरावट आई ।
- (त) जांच अवधि के दौरान रोजगार के स्तर में गिरावट आई । जांच अवधि में प्रदत्त मजदूरी में भी गिरावट आई । जांच अवधि में प्रति दिवस उत्पादकता में गिरावट की प्रवृत्ति प्रदर्शित हुई ।
- (थ) मालसूची स्तर में 2009-10 तक गिरावट आई है परंतु उसके बाद जांच अवधि में पर्याप्त वृद्धि हुई जिससे संबद्ध देश से कम कीमत पर आयातों के कारण बाजार में अपने उत्पाद को बेचने में घरेलू उद्योग की अक्षमता का पता चलता है ।
- (द) बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर आय एवं नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि प्रतिकूल रही है ।
- (ध) वर्तमान स्थिति से यह स्पष्ट तौर पर सिद्ध होता है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में संबद्ध देश से आयातों में आगे और वृद्धि होगी जिससे भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु का और अधिक पाटन होगा ।
- (न) आयातों में वृद्धि के कारण हैं (क) शामिल उत्पाद के प्रकार (ख) पूर्ववर्ती जांचों में उत्पाद की विशेषताओं का पता न लगाना (ग) शुल्क के बेंचमार्क स्वरूप का निष्प्रभावी होना ।
- (प) लगाई गई पूंजी के निर्धारण के आधार के रूप में निवल अचल परिसंपत्ति गलत है और प्राधिकारी को संयंत्रों के निवल वर्तमान मूल्य या कम से कम सकल अचल परिसंपत्तियों पर विचार करना चाहिए ।
- (फ) संयंत्र की आयु को ध्यान में रखते हुए लगाई गई पूंजी पर आय की राशि पर विचार करना चाहिए ।
- (ब) निर्धारित व्यय को कुछ अन्य वर्ष में उत्पादन के आधार पर अधिकतम नहीं बनाया जाना चाहिए । इन वर्षों में उत्पाद का उत्पादन सीधे उत्पाद मिश्रण पर निर्भर होता है और इसलिए यह निष्कर्ष निकालना उचित नहीं होगा कि कंपनी ने अकुशलतापूर्वक उत्पादन क्षमताओं का उपयोग किया है । याचिकाकर्ता ने प्राधिकारी से अनुरोध किया है कि वह जांच अवधि में संयंत्र के उपयोग के वास्तविक स्तर पर विचार करें ।

प्राधिकारी द्वारा जांच

44. जहां तक क्षति के सभी कारकों में सुधार से संबंधित तर्कों का प्रश्न है, इन पर नीचे उचित विचार किया गया है ।
45. प्राधिकारी नोट करते हैं कि पाटनरोधी नियमों में यह अपेक्षित नहीं है कि घरेलू उद्योग को पाटन के कारण हुई क्षति दूर करने हेतु प्रयोक्ता उद्योग की समूची मांग पूरी करनी चाहिए ।
46. प्राधिकारी नोट करते हैं कि हितबद्ध पक्षकारों द्वारा गोपनीय आधार पर प्रदत्त सूचना की जांच गोपनीयता के दावे की पर्याप्तता के संबंध में की गई थी । संतुष्ट होने के बाद प्राधिकारी ने जहां जरूरी हुआ है, गोपनीयता के दावों को स्वीकार किया है और ऐसी सूचना गोपनीय मानी गई है जिसका प्रकटन अन्य हितबद्ध पक्षकारों को नहीं किया गया है । जहां संभव हुआ है, गोपनीय आधार पर सूचना प्रदाता पक्षकारों को गोपनीय आधार पर दायर सूचना का पर्याप्त अगोपनीय रूपांतरण उपलब्ध कराने का निर्देश दिया गया था ।
47. प्राधिकारी नोट करते हैं कि उसने क्षति अवधि के दौरान क्षति संबंधी आंकड़ों की जांच और मूल्यांकन हेतु अपनी सुसंगत पद्धति का पालन किया है । तथापि, किसी निर्णायक समीक्षा जांच में प्राधिकारी को यह निर्धारण करना होता है कि क्या शुल्क समाप्त किए जाने से पाटन एवं परिणामी क्षति जारी रहने या उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।
48. प्राधिकारी ने तथ्यों और हितबद्ध पक्षकारों के अनुरोधों को ध्यान में करते हुए क्षति मापदंडों की निम्नानुसार तथ्यपरक जांच की है ।
49. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध II में यह उपबंध है कि क्षति के निर्धारण में (क) पाटित आयातों की मात्रा और समान उत्पाद के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव पाटित आयातों की मात्रा और समान वस्तुओं के लिए घरेलू बाजार में कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव ; तथा (ख) ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातकों के परिणामी प्रभाव, दोनों की तथ्यपरक जांच शामिल होगी । पाटित आयातों की मात्रा की जांच करते समय उक्त प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों में समग्र रूप में या भारत में उत्पादन या खपत की तुलना में पर्याप्त वृद्धि हुई है । जहां तक कीमतों पर पाटित आयातों के प्रभाव का संबंध है, प्राधिकारी इस बात पर विचार करेंगे कि क्या पाटित आयातों द्वारा भारत में समान उत्पाद की कीमत की तुलना में अत्यधिक कीमत कटौती हुई है अथवा क्या ऐसे आयातों के प्रभाव से कीमतों में अन्यथा अत्यधिक गिरावट आई है या कीमत में होने वाली उस वृद्धि में रुकावट आई है, जो अन्यथा पर्याप्त स्तर तक बढ़ गई होती ।"
50. वर्तमान क्षति विश्लेषण के प्रयोजनार्थ प्राधिकारी ने घरेलू उद्योग पर संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों की मात्रा और कीमत प्रभाव और कीमत एवं लाभप्रदता पर उसके प्रभाव की जांच की है ताकि क्षति की मौजूदगी और पाटन एवं क्षति, यदि कोई हो, के बीच कारणात्मक संबंध की जांच की सके ।

आयात मात्रा तथा बाजार हिस्सा

51. पाटित आयातों की मात्रा का निर्धारण घरेलू उद्योग द्वारा आई बी आई एस से प्राप्त और प्रस्तुत सौदेवार आंकड़ों के आधार पर किया गया है । सहयोगी निर्यातक के उत्तर से आगे यह देखा गया है कि उसके द्वारा प्रदर्शित निर्यात सौदों का उल्लेख आई बी आई एस के आंकड़ों में नहीं है । अतः आयातों की कुल मात्रा की गणना करने के लिए आयातों की कुल मात्रा पर आई बी आई एस के आंकड़ों में जांच अवधि में सहयोगी निर्यातक की मात्रा को जोड़कर विचार किया गया है । क्षति अवधि के दौरान विभिन्न देशों से पाटित आयातों की मात्रा तथा आयातों में उनके हिस्से एवं भारत में उत्पादन तथा खपत का उल्लेख निम्नलिखित तालिका में दर्शाया गया है :-

आयात मात्रा

	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
आयात मात्रा (मी.ट.)				
चीन जन.गण. से	1571	4739	7168	13874
चीन जन.गण. से आयात (प्रवृत्ति)	100	302	456	883
अन्य देशों से आयात	722	1915	2366	1769
कुल आयात	2293	6654	9534	15643
कुल आयात (प्रवृत्ति)	100	290	416	682
आयातों के % में चीन का हिस्सा	69%	71%	75%	89%
मांग/खपत/ (मीट)	27124	31548	34109	39459
विगत वर्ष की तुलना में मांग में परिवर्तन		16.31%	8.12%	15.69%
भारत में मांग के % रूप में चीन जन.गण. का हिस्सा	5.79%	15.02%	21.01%	35.16%
उत्पादन (मी.ट.)	34215	33958	34886	34258
घरेलू उत्पादन के संबंध में चीन जन.गण. से आयात (%)	4.59%	13.96%	20.55%	25.77%

- (क) यह देखा गया है कि समूची क्षति अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद के आयात में वर्ष 2009-10 में भारी वृद्धि हुई और तत्पश्चात् जांच अवधि में वृद्धि हुई । तथापि, जांच अवधि में तीसरे देशों से आयात में गिरावट आई ।
- (ख) समूची क्षति अवधि के दौरान कुल आयातों में चीन जन.गण. के बाजार हिस्से में भारी वृद्धि हुई है और इसका हिस्सा जांच अवधि में कुल आयातों का 83 प्रतिशत रहा है जबकि समूची क्षति अवधि के दौरान अन्य देशों के हिस्से में गिरावट आई है ।

आयातों का कीमत प्रभाव

52. घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति का आकलन उसकी बिक्री कीमत पर विचार करते हुए किया गया है जिसमें कर एवं शुल्क, रिबेट, छूट एवं कमीशन तथा भाडा एवं दुलाई शामिल नहीं है :

		सहयोगी निर्यातक/उत्पादक	समग्र चीन
सीआईएफ कीमत	अम.डा/किग्रा	***	***
सीमाशुल्क	अम.डा/किग्रा	***	***
सेस	अम.डा/किग्रा	***	***
पहुंच कीमत	अम.डा/किग्रा	***	***
एन एस आर	अम.डा/किग्रा	***	***
कटौती	अम.डा/किग्रा	***	***
		5-15%	1%-10%

53. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से भारत में संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग की निवल बिक्री प्राप्ति से कम रही है जिससे कीमत में अत्यधिक कटौती हुई है ।

		सहयोगी निर्यातक/उत्पादक	समग्र चीन
सीआईएफ कीमत	अम.डा/किग्रा	***	***
सीमाशुल्क	अम.डा/किग्रा	***	***
सेस	अम.डा/किग्रा	***	***
पहुंच कीमत	अम.डा/किग्रा	***	***
क्षतिरहित कीमत (एनआईपी)	अम.डा/किग्रा	***	***
कम कीमत पर बिक्री	अम.डा/किग्रा	***	***
		5-15%	1%-10%

54. उपर्युक्त से यह देखा जाता है कि जांच अवधि के दौरान चीन जन.गण. से भारत में संबद्ध वस्तु की पहुंच कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षतिरहित कीमत से कम रही है जिससे अत्यधिक कम कीमत पर बिक्री हुई है।

पाटन मार्जिन की मात्रा

55. यह नोट किया जाता है कि संबद्ध वस्तु का पाटित कीमत पर निर्यात जारी है और पाटन मार्जिन काफी अधिक है।

घरेलू उद्योग के संबंध में आर्थिक मापदंड

56. पाटनरोधी नियमावली के अनुबंध-II में यह अपेक्षित है कि क्षति के विश्लेषण में ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव की तथ्यपरक जांच शामिल होगी। जहां तक ऐसे उत्पादों के घरेलू उत्पादकों पर इन आयातों के परिणामी प्रभाव का संबंध है, नियमों में आगे यह उपबंध है कि घरेलू उद्योग पर पाटित आयातों के प्रभाव की जांच में समस्त संगत आर्थिक कारकों और बिक्री, लाभ, उत्पादन, बाजार हिस्से, उत्पादकता, निवेश पर आय या क्षमता उपयोग में वास्तविक एवं संभावित गिरावट सहित उद्योग की स्थिति पर प्रभाव डालने वाले संकेतकों; घरेलू उद्योग को प्रभावित करने वाले कारकों, पाटन मार्जिन की मात्रा; नकद प्रवाह, माल सूची, रोजगार, भुजदूरी, वृद्धि, पूंजी निवेश जुटाने की क्षमता पर वास्तविक और संभावित ऋणात्मक प्रभावों का तथ्यपरक एवं निष्पक्ष मूल्यांकन शामिल होगा।

उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता तथा क्षमता उपयोग

57. उत्पादन, बिक्री मात्रा, क्षमता तथा क्षमता उपयोग के बारे में घरेलू उद्योग की स्थिति निम्नानुसार है :-

विवरण	इकाई	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
क्षमता उपयोग					
क्षमता	मी.ट.	41500	41500	41500	41500
वी एफ वाई उत्पादन	मी.ट.	41,559	41,565	42621	41,702
150 डेनियर तक विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	मी.ट.	24,742	25,175	24,717	24,415
150 डेनियर तक विचाराधीन उत्पाद का उत्पादन	किमी.(लाख)	19,690	20,282	20,423	20,766
क्षमता उपयोग	%	100.14%	100.16%	102.70%	100.49%
घरेलू बिक्री	मी.ट.	24,831	24,895	24,575	23,816
विगत वर्ष में वृद्धि/कमी (%)			0.25%	-1.29%	-3.09%
घरेलू बिक्री	किमी.(लाख)	19,816	20,277	20,753	20,310
निर्यात बिक्री	मी.ट.				

		1,956	676	518	317
कुल बिक्री	मी.ट.	26,788	25,571	25,093	24,133
मांग (मी.ट.)		27,124	31,548	34,109	34,414
मांग में बाजार हिस्सा (%)		91.55%	78.91%	72.05%	69.21%

58. प्राधिकारी ने यह पाया है कि—

- क्षति अवधि में उत्पादन ईष्टतम रहा है और क्षति अवधि में क्षमता का पूर्ण उपयोग किया गया है ।
- जांच अवधि को छोड़कर घरेलू उद्योग की बिक्री में कोई खास अंतर नहीं देखा गया था ।

स्टॉक

59. घरेलू उद्योग की मालसूची की स्थिति निम्नानुसार रही है :—

मी.ट. में

	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
प्रारंभिक स्टॉक	***	***	***	***
अंतिम स्टॉक	***	***	***	***
औसत स्टॉक	1709.5	978	791.5	1209
औसत स्टॉक(सूचीबद्ध)	100	57	46	71

60. यह देखा जाता है कि मालसूची के स्तर में 2009-10 तक गिरावट आई परंतु उसके बाद जांच अवधि में मालसूची में वृद्धि हुई । स्पष्टतः जांच अवधि के दौरान बिक्री मात्रा में आई गिरावट से पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में मालसूची में वृद्धि हुई है ।

बाजार हिस्सा

61. भारत में संबद्ध वस्तु की मांग में घरेलू उद्योग और चीन जन.गण. का बाजार हिस्सा निम्नानुसार है :—

उत्पादन	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
मांग में घरेलू उद्योग का बाजार हिस्सा (%)	91.55%	78.91%	72.05%	61.16%
भारत में मांग में चीन जन.गण. का हिस्सा %	5.79%	15.02%	21.01%	35.16%
घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में गिरावट/ वृद्धि		-16%	-10%	-4%

62. ये देखा जाता है कि चूंकि घरेलू उद्योग ने उत्पादन हेतु अपनी पूर्ण क्षमता का उपयोग किया है, इसलिए मांग में वृद्धि के परिणामस्वरूप चीन के निर्यातकों/उत्पादकों के बाजार हिस्से में वृद्धि हुई और घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में तुलनात्मक गिरावट आई। तथापि, यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान संबद्ध देश के बाजार हिस्से में समग्र रूप में वृद्धि हुई है।

लाभ

63. घरेलू बाजार में संबद्ध वस्तु की बिक्री से घरेलू उद्योग को हुआ लाभ निम्नानुसार है :-

	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
कर पूर्व लाभ (कुल लाभ) (लाख रुपए में)	***	***	***	***
कर पूर्व लाभ (कुल लाभ) (सूचीबद्ध)	100	163.39	730.06	617.53
कर पूर्व लाभ (प्रति इकाई लाभ) (रु/किग्रा)	***	***	***	***
कर पूर्व लाभ (प्रति इकाई लाभ) (सूचीबद्ध)	100	170.42	1557.28	1312.68

64. यह नोट किया जाता है कि घरेलू उद्योग के लाभ में 2009-10 तक वृद्धि हुई परंतु जांच अवधि में गिरावट आई।

मजदूरी

65. घरेलू उद्योग द्वारा प्रदत्त मजदूरी और उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरी का भार निम्नानुसार रहा है -

लाख रुपए में	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
मजदूरी (लाख रुपए)	***	***	***	***
मजदूरी (लाख रुपए) (सूचीबद्ध)	100	110	124	125
उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरी (रु/किग्रा)	***	***	***	***
उत्पादन की प्रति इकाई मजदूरी (सूचीबद्ध)	100	111	122	125

66. यह देखा जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान कुल मजदूरी और प्रति इकाई मजदूरी में वृद्धि हुई है।

रोजगार

67. संबद्ध वस्तु हेतु कर्मचारियों की संख्या निम्नलिखित तालिका में दी गई है :-

	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
कर्मचारियों की संख्या	***	***	***	***
कर्मचारियों की संख्या (सूचीबद्ध)	100	101	103	99
प्रति कर्मचारी उत्पादकता	***	***	***	***
प्रति दिवस उत्पादकता	***	***	***	***

68. यह नोट किया जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि के दौरान रोजगार के स्तर में मामूली गिरावट आई। हालांकि क्षति अवधि में प्रति दिवस उत्पादकता लगभग स्थिर रही थी।

निवेश पर आय

69. विचाराधीन उत्पाद के लिए निवेश पर आय का आकलन संबद्ध वस्तु की लंबाईवार उत्पादन (कि मी. में) के आधार पर किया गया है जो निम्नानुसार है :-

	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
नियोजित पूंजी (लाख रुपए में)	***	***	***	***
नियोजित पूंजी (सूचीबद्ध)	100	110.06	108.69	106.04
ब्याज तथा कर पूर्व लाभ (लाख रुपए में)	***	***	***	***
ब्याज तथा कर पूर्व लाभ (सूचीबद्ध)	100	160.11	730.06	617.53
निवेश पर आय (%)	0-5	5-10	20-25	20-25

70. यह देखा जाता है कि जहां लगाई गई पूंजी में प्रति वर्ष गिरावट आई परंतु निवेश पर आय में 2009-10 तक प्रति वर्ष वृद्धि हुई परंतु निवेश पर आय में गिरावट आधार वर्ष की तुलना में जांच अवधि में देखी गई है।

नकद प्रवाह पर प्रभाव

71. क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग द्वारा अर्जित लाभ की स्थिति निम्नानुसार है :-

	2007-08	2008-09	2009-10	जांच अवधि
नकद लाभ (लाख रुपए में)	***	***	***	***
नकद लाभ (सूचीबद्ध)	100	124	591	498
कर पूर्व लाभ (प्रति इकाई लाभ)	***	***	***	***
कर पूर्व लाभ (सूचीबद्ध)	100	171	1,541	1,259

72. यह नोट किया जाता है कि समूची क्षति अवधि के दौरान नकद लाभ में वृद्धि हुई परंतु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में जांच अवधि में इसमें गिरावट आई ।

वृद्धि

73. यह देखा जाता है कि आधार वर्ष की तुलना में बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर आय तथा नकद लाभ के संबंध में घरेलू उद्योग की वृद्धि में इजाफा हुआ है परंतु पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में इसमें गिरावट आई है । स्पष्टतः लागू पाटनरोधी शुल्क से घरेलू उद्योग को राहत मिली है ।

क्षति के जारी रहने पर निष्कर्ष

74. यह देखा गया है कि

- (क) संबद्ध वस्तु के आयात में आधार वर्ष की तुलना में और मूल जांच अवधि की तुलना में अत्यधिक वृद्धि हुई है ।
- (ख) लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद चीन जन गण से आयातों में वृद्धि हुई है ।
- (ग) समूची क्षति अवधि के दौरान आयात के हिस्से में भारत में मांग/खपत के अनुरूप वृद्धि हुई है ।
- (घ) मांग में वृद्धि होने के कारण समूची क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग के बाजार हिस्से में इस बात पर विचार करते हुए भी गिरावट आई है कि घरेलू उद्योग द्वारा पूर्ण क्षमता का उपयोग किया जा रहा था ।
- (ङ) क्षमता उपयोग, लाभप्रदता आदि के संबंध में घरेलू उद्योग के निष्पादन में सुधार हुआ है ।
- (च) जांच अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की मालसूची के स्तर में वृद्धि हुई है ।
- (छ) आयातों के कारण घरेलू उद्योग की कीमत में अत्यधिक कटौती हो रही है । इसके अलावा, इन आयातों की कीमत घरेलू उद्योग के लिए निर्धारित क्षति रहित कीमत से काफी कम है ।

75. यह नोट किया गया है कि भारत में संबद्ध वस्तु का पाटन जारी है । इस बात पर विचार करते हुए संबद्ध देश से और अधिक मात्रा में पाटित आयात होने की संभावना है कि चीन जन.गण. मे संबद्ध वस्तु की पर्याप्त अप्रयुक्त क्षमताएं हैं । उसके अलावा, चीन जन.गण. के भीतर संबद्ध वस्तु की मांग में कमी रही है जिससे चीन के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा अन्य बाजारों की तलाश किए जाने की संभावना है । भारत में

संबद्ध वस्तु की बढ़ी हुई मांग के कारण इन वस्तुओं के आने की संभावना है । इस बात पर विचार करते हुए कि चीन की वस्तु का पाटन जारी है, लागू पाटनरोधी शुल्क में कोई अवरोध भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु के पाटन को बढ़ा सकता है ।

76. ऐसा प्रतीत होता है कि लागू पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के कारण आज की स्थिति के अनुसार घरेलू उद्योग को कोई वास्तविक क्षति नहीं हो रही है । यह भी नोट किया जाता है कि दो घरेलू उत्पादकों ने हाल ही में अपना उत्पादन रोक दिया है जिससे ऐसे परिदृश्य का पता चलता है जिसमें घरेलू उद्योग अपनी क्षमता का उपयोग और बाजार में उचित कीमत प्राप्त करना जारी रख सकता है । परंतु यदि चीन जनगण. से संबद्ध वस्तु का पहुंच मूल्य के साथ कीमत की बराबरी करनी है तो उसका घरेलू उद्योग के कीमत मापदंड पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । विकल्पतः यह अपने बाजार हिस्से को काफी हद तक गवाएगा जिससे मात्रात्मक मापदंडों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ।

ट. क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना

घरेलू उद्योग के अनुरोध

77. घरेलू उद्योग ने संक्षेप में निम्नानुसार तर्क दिए हैं :—

➤ कीमत कटौती, क्षति मार्जिन के लिए — निम्नलिखित संगत हैं :—

क. सहयोगी निर्यातक—कीमत कटौती और क्षति मार्जिन का निर्धारण सर्वप्रथम सहयोगी निर्यातकों और उसके बाद असहयोगी निर्यातकों के लिए किया जाना अपेक्षित है । इस प्रयोजनार्थ प्राधिकारी के समक्ष प्रश्नावली के उत्तर की अनदेखी नहीं की जा सकती ।

ख. प्रतिवादी निर्यातक का निर्विवाद रूप से सकारात्मक पाटन मार्जिन, सकारात्मक कीमत कटौती और सकारात्मक क्षति मार्जिन होना चाहिए । यदि दावा किए गए तथ्य भिन्न/प्रतिकूल हैं तो हम उचित साक्ष्य देंगे । तथापि, उनकी बाजार आसूचना के आधार पर प्रतिवादी निर्यातक के लिए कीमत कटौती और क्षति मार्जिन 25-30 रुपए किग्रा से अधिक है ।

ग. असहयोगी निर्यातक—असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन सहयोगी निर्यातकों से कम नहीं हो सकता । अतः असहयोगी निर्यातकों के लिए पाटन मार्जिन भी सकारात्मक और वस्तुतः सहयोगी निर्यातक से अधिक होना चाहिए ।

घ. एक ओर पाटन मार्जिन और दूसरी ओर कीमत कटौती तथा क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु प्रयुक्त निर्यात कीमत भिन्न नहीं हो सकती । वस्तुतः प्राधिकारी ने कई मामलों में असहयोगी निर्यातकों के लिए न्यूनतम निर्यात कीमत पर विचार किया है ।

ड. चूंकि असहयोगी निर्यातकों के लिए निर्यात कीमत सहयोगी निर्यातकों की निर्यात कीमत से अधिक नहीं हो सकती । यदि ऐसा होता है तो असहयोगी निर्यातकों के लिए कीमत कटौती और क्षति मार्जिन सहयोगी निर्यातकों से कम नहीं हो सकता ।

- मात्र इस तथ्य कि याचिका में एक त्रुटि है, और कम कीमत कटौती का दावा किया गया है, का तात्पर्य यह नहीं है कि प्राधिकारी अब उच्च कीमत कटौती तथा क्षति मार्जिन का निर्धारण करेंगे। निष्पक्ष प्राधिकारी के लिए सही मापदंडों का निर्धारण करना अपेक्षित है और यदि घरेलू उद्योग ने त्रुटियाँ की हैं तो प्राधिकारी (खासकर तब जब घरेलू उद्योग ने इनका उल्लेख सत्यापन के दौरान किया हो) द्वारा उनमें सुधार करना अपेक्षित है। अतः कम कीमत कटौती अथवा क्षति मार्जिन के मात्र तथ्य का तात्पर्य यह नहीं है कि प्राधिकारी उच्च क्षति मार्जिन तय नहीं कर सकते।
- वी एफ वाई के ए ग्रेड और सुपर ए ग्रेड के अत्यधिक आयात हुए हैं। साफ तौर पर प्राधिकारी को इन निर्यातों की कीमत कटौती का निर्धारण करने के लिए मात्र ए ग्रेड की सामग्री हेतु घरेलू उद्योग की बिक्री कीमत पर विचार करना चाहिए। ए/सुपर ए श्रेणी तथा अन्य श्रेणियों के बीच कीमत अंतर काफी अधिक है।
- चीन से निर्यात की मात्रा में अत्यधिक वृद्धि हुई है।
- चीन के उत्पादकों के पास अत्यधिक अप्रयुक्त क्षमताएं हैं— चीन के उत्पादकों के पास वर्तमान क्षमता 218,000 मी.ट. की है। इसकी तुलना में चीन का उत्पादन घट रहा है।
- चीन की वी एफ वाई की खपत घट रही है और इसलिए पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में चीन के उत्पादकों द्वारा पाटन तेज किए जाने की संभावना है।

सूचना से पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में पाटन की संभावना का पता चलता है। अतः यह स्पष्ट है कि सूचना से स्पष्ट तौर पर पाटन एवं क्षति की संभावना है।

प्राधिकारी द्वारा जांच

78. वर्तमान मामले में बिक्री, उत्पादन, क्षमता उपयोग, लाभ, निवेश पर आय और नकद लाभ आदि में आधार वर्ष की तुलना में घरेलू उद्योग की वृद्धि हुई है परंतु उसमें पूर्ववर्ती वर्ष की तुलना में गिरावट आई है। पाटनरोधी शुल्क लगाए जाने के कारण घरेलू उद्योग अपना निष्पादन सुधारने में समर्थ हुआ है।
79. यह नोट किया गया है कि लागू पाटनरोधी शुल्क के बावजूद क्षति अवधि में संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयात और उसके बाजार हिस्से में वृद्धि हुई है।
80. घरेलू उद्योग द्वारा जो सूचना/आंकड़े प्रदान किए हैं उनसे यह पता चलता है कि चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु के उत्पादकों/निर्यातकों के पास अत्यधिक उत्पादन क्षमताएं हैं। इसके अलावा घरेलू उद्योग ने चीन जन.गण. में मांग में गिरावट के बारे में भी सूचना/आंकड़े प्रदान किए हैं जिसके परिणामस्वरूप चीन जन.गण. में संबद्ध वस्तु का कम क्षमता उपयोग हुआ है।
81. यह देखा गया है कि लागू शुल्क के बावजूद क्षति अवधि के दौरान चीन जन गण से संबद्ध वस्तु के आयात में वृद्धि हुई है जिससे कुल मांग और कुल आयातों की तुलना में बाजार हिस्से में बढ़ोत्तरी हुई है। लागू पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की स्थिति में चीन के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार पर नजर रखने और पटित कीमत पर भारत में निर्यात मात्रा में और अधिक वृद्धि की संभावना है। संबद्ध वस्तु के वर्तमान पाटन से संवर्धित पाटन की संभावना है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति पहुंचने की संभावना है जिसे इस समय लागू पाटनरोधी शुल्क का वांछित लाभ मिल रहा है।

82. चूंकि वर्तमान पाटनरोधी शुल्क संदर्भ कीमत के आधार पर है, इसलिए यह स्पष्ट तौर पर कारगर है क्योंकि पहुंच मूल्य सामान्यतः संदर्भ कीमत से अधिक रहा है । यदि पाटनरोधी शुल्क समाप्त करने की अनुमति दी जाती है तो चीन जन गण से पहले से हो रहे पाटित आयात अभी भी कम कीमत पर हो सकते हैं । ऐसी स्थिति में घरेलू उद्योग या तो पहुंच कीमत के साथ बराबरी करेगा अथवा उसकी कीमत मापदंडों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा या फिर उसके बाजार हिस्से में भारी गिरावट आएगी और मात्रात्मक मापदंडों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा । किसी भी स्थिति में पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग को वास्तविक क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है ।

83. इसके अलावा, यह संभावना है कि अत्यधिक बेरी क्षमताओं का उपयोग कर अपनी बिक्री में पर्याप्त वृद्धि करने में सक्षम बनने के लिए चीन के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा भारतीय बाजार में बाजार हिस्से को हड़पने और उसमें अत्यधिक वृद्धि किए जाने की संभावना है और चूंकि चीन के निर्यातकों/उत्पादकों द्वारा घरेलू बाजार में कीमत में इस समय भी कटौती की जा रही है, इसलिए यह स्थिति और खराब होने की संभावना है जो घरेलू उद्योग के लिए प्रतिकूल होगी । निम्नलिखित विश्लेषण से घरेलू उद्योग की उस स्थिति का पता चलता है जब वह पहुंच कीमत पर संबद्ध वस्तु की बिक्री करेगा ।

विवरण	इकाई	जांच अवधि
वर्तमान कटौती	रु./किग्रा.	***
वर्तमान एन एस आर	रु./किग्रा.	***
पहुंच कीमत के साथ निवल बिक्री कीमत की बराबरी करने के बाद एन एस आर	रु./किग्रा.	***
उत्पादन की लागत	रु./किग्रा.	***
वर्तमान लाभ	रु./किग्रा.	***
पहुंच कीमत के साथ निवल बिक्री कीमत की बराबरी करने के बाद लाभ	रु./किग्रा.	***
प्रति किग्रा. लाभ की हानि	रु./किग्रा.	***

84. इस बात पर विचार करते हुए कि संबद्ध वस्तु का पाटन जारी है, इस बात की संभावना है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से संबद्ध देश से लगभग इसी कीमत पर संबद्ध वस्तु का आयात बढ़ाए जाने की संभावना है जिसका घरेलू उद्योग पर अत्यधिक प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा ।

85. पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की कीमत पर दबाव पड़ने की संभावना है । अतः यह संभावना है कि पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने से चीन के निर्यातक/उत्पादक पाटित कीमत पर अपनी निर्यात मात्रा में भारी वृद्धि करने के लिए प्रोत्साहित होंगे जिनकी वजह से घरेलू उद्योग की कीमत में पहले से ही भारी कटौती हो रही है ।

ठ. कारणात्मक संबंध

86. प्राधिकारी ने निर्णायक समीक्षा जांच में कारणात्मक संबंध के महत्व और प्रासंगिकता के अनुरोधों की जांच की है। धारा 9क (5) के अंतर्गत यह नोट करना महत्वपूर्ण है कि प्राधिकारी के लिए पाटन एवं क्षति की संभावना और शुल्क जारी रखने की जरूरत की जांच करनी अपेक्षित होगी है भले ही समीक्षा अवधि के दौरान विचाराधीन उत्पाद का कोई आयात हुआ हो अथवा नहीं। इसके होते हुए भी इस बात की जांच की गई थी कि क्या पाटनरोधी नियमावली में सूचीबद्ध अन्य मापदंडों के कारण घरेलू उद्योग को क्षति हुई है।

- (क) **खपत की पद्धति में परिवर्तन :-** चूंकि क्षति अवधि में उत्पाद की मांग में वृद्धि हुई है। इसका यह संकेत मिलता है कि विचाराधीन उत्पाद के बारे में खपत की पद्धति में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।
- (ख) **विदेशी और घरेलू उत्पादों के व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार और उनके बीच प्रतिस्पर्धा:-** रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार ऐसा कोई व्यापार प्रतिबंधात्मक व्यवहार नहीं है जिससे घरेलू उद्योग को क्षति हो सकती है।
- (ग) **प्रौद्योगिकी विकास :-** रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार संबंधित उत्पाद के उत्पादन की प्रौद्योगिकी में कोई परिवर्तन नहीं हुआ है।
- (घ) **निर्यात निष्पादन :-** प्राधिकारी को प्रदत्त क्षति संबंधी सूचना पृथक किए जाने की सीमा तक घरेलू उत्पादन और निर्यातों के लिए अलग से प्रदान की गई है।
- (ङ) **उत्पादकता :-** यह देखा गया है कि क्षति अवधि के दौरान घरेलू उद्योग की प्रतिदिन उत्पादकता स्थिर रही है।

क्षति की मात्रा और क्षति मार्जिन

87. प्राधिकारी द्वारा निर्धारित घरेलू उद्योग द्वारा उत्पादित संबद्ध वस्तु की क्षति रहित कीमत की तुलना जांच अवधि के दौरान क्षति मार्जिन के निर्धारण हेतु निर्यातों के पहुंच मूल्य के साथ की गई है। इस प्रकार तुलना किए जाने पर क्षति मार्जिन की गणना निम्नानुसार की गई है :-

विवरण	इकाई	यीबिन हाइस्ट (विशिष्ट डेनियर)	चीन जन.गण. - अन्य
एनआईपी	रु./किग्रा.	***	***
पहुंच कीमत	रु./किग्रा.	***	***
क्षति मार्जिन	रु./किग्रा.	***	***
क्षति मार्जिन (%)	%	5%-15%	15%-25%

ड. निष्कर्ष

88. हितबद्ध पक्षकारों द्वारा दिए गए तर्कों, प्रदत्त सूचना और किए गए अनुरोधों तथा उपर्युक्त जांच परिणाम में दर्ज किए गए अनुसार प्राधिकारी के समक्ष उपलब्ध तथ्यों को ध्यान में रखते हुए तथा पाटन जारी रहने और परिणामी क्षति की स्थिति और पाटन एवं क्षति जारी रहने/उसकी पुनरावृत्ति होने की संभावना के आधार पर प्राधिकारी यह निष्कर्ष निकालते हैं कि :— संबद्ध देश से भारतीय बाजार में संबद्ध वस्तु पाटित कीमत पर प्रवेश कर रही है और पाटन मार्जिन काफी अधिक है। यह देखा जाता है कि पाटनरोधी शुल्क की मौजूदगी के बावजूद भारत को पाटित कीमत पर संबद्ध वस्तु का निर्यात जारी है। यह नोट किया जाता है कि अभी भी अर्थात् जब पाटनरोधी शुल्क लागू है, कीमत कटौती और कम कीमत पर बिक्री काफी अधिक है। यदि घरेलू उद्योग इसकी बराबरी करने का प्रयास करता तो कीमत मापदंडों पर अत्यधिक कीमत प्रभाव पड़ना चाहिए था। विकल्पतः मात्रात्मक मापदंडों के संदर्भ में क्षति हुई होती। अतः वर्तमान पाटनरोधी शुल्क समाप्त किए जाने की अनुमति देने पर घरेलू उद्योग को क्षति की पुनरावृत्ति होने की संभावना है। आगे यह नोट किया जाता है कि रिकॉर्ड में उपलब्ध सूचना के अनुसार पाटनरोधी शुल्क की अवधि बढ़ाना और उसकी राशि में संशोधन करना अपेक्षित है।

ढ. सिफारिशें

89. उपर्युक्तानुसार निष्कर्ष निकालने के बाद प्राधिकारी का यह मत है कि पाटनरोधी उपाय की अवधि बढ़ाना और पाटनरोधी शुल्क की राशि में संशोधन करना और उसे निम्नलिखित शुल्क तालिका में निर्दिष्ट किए गए अनुसार संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के संबंध में लागू करना अपेक्षित है।

90. प्राधिकारी द्वारा अपनाए गए कमतर शुल्क नियम को ध्यान में रखते हुए प्राधिकारी पाटन मार्जिन और क्षति मार्जिन जो भी कम हो, के बराबर पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं ताकि घरेलू उद्योग को हुई क्षति समाप्त की जा सके। प्राधिकारी आगे यह नोट करते हैं कि भार और कीमत के बारे में विचाराधीन उत्पाद के भीतर काफी अंतर है। अतः इस मामले में संदर्भ कीमत या निर्धारित शुल्क के संबंध में पाटनरोधी शुल्क उचित नहीं होगा। अतः प्राधिकारी संबद्ध देश से संबद्ध वस्तु के आयातों के सी आई एफ मूल्य के प्रतिशत के रूप में परिकलित मूल्यानुसार शुल्क के रूप में पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश करते हैं। तदनुसार संबद्ध देश के मूल की या वहां से निर्यातित संबद्ध वस्तु के सभी आयातों पर केन्द्र सरकार द्वारा इस संबंध में जारी की जाने वाली अधिसूचना की तारीख से निम्नलिखित शुल्क तालिका के कॉलम 8 में उल्लिखित प्रतिशत को लागू कर निकाली गई राशि के बराबर निश्चयात्मक पाटनरोधी शुल्क लगाने की सिफारिश की जाती है।

शुल्क तालिका

क.सं.	शीर्ष/उपशीर्ष	वस्तु विवरण	उद्गम का देश	निर्यात का देश	उत्पादक	निर्यातक	शुल्क राशि सी आई एफ मूल्य के % के रूप में
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	5403	विस्कोस फिलामेंट यार्न *	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन	मै. यीबिन हायस्ट फाइबर लिमिटेड कार्पोरेशन	5.04%
2.	5403	विस्कोस फिलामेंट यार्न *	चीन जन. गण.	चीन जन. गण.	कोई	कोई	16.90%
3.	5403	विस्कोस फिलामेंट यार्न *	चीन जन. गण.	कोई	कोई	कोई	16.90%
4.	5403	विस्कोस फिलामेंट यार्न *	कोई	चीन जन. गण.	कोई	कोई	16.90%

टिप्पणी: यहां विस्कोस फिलामेंट यार्न * का तात्पर्य 150 डेनियरों (और $\pm 4\%$ अनुमत्य परिवर्तन तक के विस्कोस रेयन फिलामेंट यार्न से है जिसमें 67 डेसीटैक्स से कम का मोनोफिलामेंट यार्न, जिसे विस्कोस फिलामेंट यार्न या वी एफ वाई, रेयन फिलामेंट यार्न, 8 सिल्क यार्न, सेल्युलोज यार्न या रेयन यार्न शामिल हैं और जिसमें 100 प्रतिशत विस्कोस यार्न यथा डायड यार्न, फ्लैट यार्न, माइक्रो फिलामेंट माइक्रो यार्न, ट्विस्टेड यार्न (कशीदाकारी यार्न को छोड़कर), वी एफ वाई का द्विगुणित/बहुगुणित प्लार्ड यार्न आदि शामिल हैं।

91. इस प्रयोजनार्थ आयातों का पहुंच मूल्य सीमाशुल्क अधिनियम, 1962 के अंतर्गत सीमाशुल्क द्वारा यथानिर्धारित आकलनयोग्य मूल्य होगा और उसमें सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम, 1975 की धारा 3, 3क, 8ख, 9 और 9क के तहत लगाए गए शुल्कों को छोड़कर सभी सीमाशुल्क शामिल होंगे।

92. इस आदेश के खिलाफ कोई अपील सीमाशुल्क टैरिफ अधिनियम के अनुसार, सीमाशुल्क, उत्पादक शुल्क और सेवाकर अपीलीय न्यायाधिकरण में दायर की जा सकेगी ।

विजयलक्ष्मी जोशी, निर्दिष्ट प्राधिकारी

MINISTRY OF COMMERCE AND INDUSTRY

(DIRECTORATE GENERAL OF ANTI-DUMPING AND ALLIED DUTIES)

NOTIFICATION

New Delhi, the 24th February, 2012

Subject : Sunset Review of anti-dumping duty imposed concerning imports of Viscose Filament Yarn originating in or exported from China PR—Final Findings.

A. BACKGROUND

No. 15/23/2010-DGAD.—Whereas having regard to the Customs Tariff Act, 1975 as amended from time to time (hereinafter referred to as the Act) and the Customs Tariff (Identification, Assessment and Collection of Antidumping Duty on Dumped Articles and for Determination of Injury) Rules, 1995, as amended from time to time (hereinafter referred to as the AD Rules), the definitive anti-dumping duty was originally imposed vide notification No. 14/23/2004-DGAD dated 4th April 2006 on imports of *Viscose Filament Yarn* (hereinafter referred to as the subject goods) originating in or exported from China PR (hereinafter referred to as the subject country); whereupon the Anti-dumping duty was imposed vide Customs Notification No.45/2006 dated 24th May 2006.

2. And whereas these findings were modified in a mid-term review investigation by the Designated Authority vide final findings No.15/8/2007-DGAD dated 22nd May 2009; whereupon the Anti-dumping duty was modified by the Central Government vide Customs Notification No.81/2009 dated 13th July 2009.

3. And whereas, in view of the order of the Hon'ble Delhi High court in the matter of *Indian Metal and Ferro Alloys Ltd v/s Designated Authority*, Writ Petition (Civil) No. 16893 of 2006 and in accordance with Section 9 A (5) of the Act, read with Rule 23 of AD Rules, the Authority issued a public notice dated 25th February 2011, published in the Gazette of India, Extraordinary, initiating the Sunset review investigation to review the need for continued imposition of duties in force and to examine whether the cessation of such duty is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and injury. And whereas, the antidumping duty as notified vide Notification No. - 45/2006 Customs dated 24th May, 2006 (as amended by notification no. 81/2009 dated 13th July 2009) was extended up to 24th February, 2012 vide notification No 38 / 2011 -Customs dated 9th May, 2011 in terms of Section 9(A)(5) of the Act.

B. PROCEDURE

4. In this proceeding, the procedure described herein-below has been followed:

- i. The Embassy of the subject country in India was informed about the initiation of the investigation, in accordance with Rule 6(2) of the AD Rules.

- ii. The Authority sent copies of initiation notification dated 25th February 2011 to the Embassy of the subject country, known exporters/producers from the subject country, known importers and other interested parties, and the domestic producers, as per the information available with it. Parties to this investigation were requested to file the questionnaires' responses and make their views known in writing within the prescribed time limit. Copies of the letter and questionnaires sent to the exporters/producers were also sent to the Embassy of the subject country along with a list of known exporters / producers with a request to advise the exporters/ producers from the subject country to respond to the questionnaires within the prescribed time.
- iii. Questionnaires were sent to the following known exporters/producers from the subject country in accordance with Rule 6(4) of the AD Rules to elicit relevant information:

S.N.	Company's Name
1.	M/s Yibin Grace Co. Ltd., Hangtian Road, Nan'an Economic Development Zone, Yibin city, Sichuan Province, China PR644002
2.	M/s Yibin Heist Fibre Co. Ltd, China PR
3.	M/s Baoding Swan Group, No.1369, Sjemgxomg West Road, Baoding City, Hebei Province-071055 China PR
4.	M/s Xinxiang Bailu Chemical fibre Group Co. Ltd., Jinyuan Street, Beizhan District, Xinxiang City, Henan Province, China PR
5.	M/s Jilin Chemical Fibre Group Co. Ltd., 516-1, Jiuzhan Street, Changyi District, Jilin City-132115 China PR
6.	M/s Hangzhou B.P. Chemical Fibre Co. 1265, Moganshan Road, Hangzhou-310011, China PR

In response thereto, M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation an exporter/producer from the subject country has filed the questionnaires' response.

- iv. Questionnaires were sent to the following known domestic producers, importers, users and associations of the subject goods in India seeking necessary information:

S.N.	Company's Name
1.	M/s Kesoram Rayon, 9/1, R.N. Mukherjee Road, Kolkata-700 001
2.	M/s Indian Rayon, B-Wing, Ground Floor, Ahura Centre, Mahakali Caves Road, Andheri (East), Mumbai-400 093
3.	M/s Century Rayon, Century Bhawan, Dr. Annie Besant Road, Mumbai-400 025
4.	M/s Shah Trading Co. Mumbai-21

5.	M/s Vyapar Com & Industries Ltd, Mumbai-5
6.	M/s Yash Enterprises, 347-2A, Daftari Niwas, Telang Road No.1, Matunga Central Railway, Mumbai-19
7.	M/s Doriwala Industries, 8, Hajoori Chambers, Zampa Bazar, Surat - 395003
8.	M/s Marwadi Brothers, 77, Ismail Curry Road, Ahmed Building, 1 st Floor, Mumbai-3
9.	M/s. Rajmal Son's and Group, 1-A, Ladakara Street, Shevapet, Salem-2
10.	M/s M/s. Chunnilal Kundanmall, Shevapet, Salem-2
11.	M/s Shanti Textiles, 14, Nagair Street, Shevapet, Salem-2
12.	M/s Krishan sale's Corporation, Bangalore-560002
13.	M/s Bittu Synthetics Pvt. Ltd., 142/143, Super Yarn Market, Zampa
14.	M/s Amrit Rayon, Tambakata, Pydhonie, Mumbai

S.N.	Association's/Other's Name
1.	Association of Man-made Fibre Industry of India, Resham Bhavan, 5 th Floor, 78, Veer Nariman Road, Mumbai-400 020

- v. In response to the initiation notification, Salem District Art Silk Merchants' Association filed its submissions.
- vi. The imports data for the period of investigation and preceding three years was called from Directorate General of Commercial Intelligence and Statistics (DGCI&S).
- vii. In pursuance to the notification issued by the Authority dated 25th February 2011, the Authority received a documented request from AMFII on behalf of M/s Indian Rayon and M/s Kesoram Rayon, the domestic producers of the subject goods seeking continuance and enhancement of anti-dumping duty in force against dumping of the subject goods in the Indian market by the producers and/or exporters from the subject country. Subsequently, M/s Century Rayon has also submitted its information/data for undertaking the injury analysis.
- viii. The Authority made available non-confidential version of the evidence presented by the interested parties in the form of a public file kept open for inspection by the interested parties.
- ix. The Authority has examined the information furnished by the domestic producers to the extent possible on the basis of Generally Accepted Accounting Principles (GAAP) to analyze the likelihood of continuation/recurrence of injury and to work out the cost of production and the non-injurious price of the subject

goods in India so as to ascertain if anti-dumping duty lower than the dumping margin would be sufficient to remove injury to the domestic industry.

- x. In accordance with Rule 6(6) of the AD Rules, the Authority also provided opportunity to all interested parties to present their views orally in a public hearing held on 25th July 2011. The parties which presented their views in the public hearing were requested to file written submissions of the views expressed orally. The arguments made in the written submissions received from the interested parties have been considered, wherever found relevant, in the disclosure statement.
- xi. The Period of Investigation (POI) for the purpose of the present review is 1st October 2009 to 30th September 2010 (12 months). However, injury analysis shall cover the years 2007-08, 2008-09, 2009-10 & POI.
- xii. Verification to the extent deemed necessary was carried out in respect of the information & data submitted by the domestic producers and the co-operative exporter/producer from China PR.
- xiii. In accordance with the Rule 16 of the AD Rules, the essential facts under consideration before the Authority in the instant investigation were disclosed to the known interested parties. The comments received on the disclosure statement, to the extent considered relevant, have been considered in these findings.
- xiv. Information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- xv. Wherever an interested party has refused access to, or has otherwise not provided necessary information during the course of the present investigation, or has significantly impeded the investigation, the Authority has recorded these findings on the basis of the 'facts available'.
- xvi. *** In this statement represents information furnished by the interested parties on confidential basis and so considered by the Authority under the AD Rules.

Post-Disclosure statement submissions made by interested parties and the Examination thereof

M/s Yibin Heist Fibre Co. Ltd, China PR,

The following submissions, in brief, have been made by M/s Yibin Heist Fibre Co. Ltd, China PR, in response to the Disclosure statement:

- The time granted to offer comments to the said disclosure statement is not sufficient.
- Proposed Inclusion of M/s Century Rayon: It has been contended that belated information and data of M/s Century Rayon should not have been accepted.
- As regards the Form of Duty; it has been submitted that the Section 9A(5) of the Custom Tariff Act only allows the Authority to extend the period of such imposition for a further period of five years and such further period shall commence from the date of order of such extension.
- Determination of constructed normal value: It has been submitted that the normal value has been proposed to be constructed without disclosing detailed methodology. Conversion cost and consumption factor of which domestic producer has been taken into consideration to determine normal value has not been disclosed.
- It has been submitted that the applicants have grown at a healthy pace without any injury as a consequence of dumped imports. In any case, the imports are necessitated due to short supply in the market and lack of domestic capacities. In such circumstances, the only consequence of proposed imposition would be to the detriment of the downstream industry & textile industry, which would be rendered uncompetitive in both the export and domestic market. Clearly, in this case the applicants have been afforded protection for last 5 years and given the present circumstances, the same is no longer legally required to be extended by further period of 5 years under a review conducted under Section 9A(5) read with Rule 23(1B).

Domestic industry

The following submissions, in brief, have been made by Domestic industry in response to the Disclosure statement:

- Constructed normal value may be reviewed in view of the submissions relating to conversion costs involved in production of the product under consideration.
- The responding exporter has not reported VAT difference prevailing in the product. The available evidence shows VAT refund of 16%. The export price must therefore be adjusted by 1%.
- In the previous investigations the duty imposed was benchmark basis which failed to address the situation of dumping because of the increase in prices of raw material. The domestic industry has requested the Authority to revise the form of duty and impose fixed form of duty for the following reasons:
 - i. Significant product types having significantly different costs and prices, thus making benchmark form unworkable and ineffective.
 - ii. All parameters which govern costs and prices have not been recognized by the Authority in previous investigations.
 - iii. One benchmark fixed even for one denier, based on cost of production of that denier is grossly insufficient to represent benchmark for the product type due to

difference in quality (gradation), doubling, twisting, dyeing, packing, lusture, etc.

- iv. Parameters such as doubling, twisting, packing, quality (gradation of the product in terms of perceived quality standards in this product), dyeing, lusture, etc. all have impact on the product costs and prices.
 - v. The data available with the domestic industry shows that only two deniers (120 and 150) have been exported by the exporter. Thus, in any case, different benchmarks cannot be given, when the product is produced and sold in a large number of deniers. The Designated Authority has in fact found more than 30 different product types in the present case. Even this list of product types is non exhaustive given that the product parameters include (i) denier, (ii) quality, (iii) packing, (iv) colour, (v) lusture, (vi) doubling, (v) twisting, (vi) doubling & twisting, (vii) doubling & dyeing, (viii) twisting & dyeing. In view of large number of possible permutations and combinations, benchmark duty is unworkable and ineffective.
 - vi. The experience of the domestic industry establishes that benchmark duty is unworkable and ineffective. The duty has failed to serve the intended objective of preventing dumping.
 - vii. The benchmark duty levied by the Designated Authority in the Mid-Term Review became ineffective due to increase in the raw material prices i.e. pulp which led to increase in the costs and prices of the product under consideration.
 - viii. In view of significant increase in the cost of production, the current prices of the domestic industry and imports are much higher than the non injurious price determined for the investigation period.
 - ix. The Designated Authority has changed form of duty in sunset review and midterm review.
 - x. Referring to past cases on textile products, cases where Authority has changed the form of duty in review investigation, various CESTAT decisions and the above cited reasons, the domestic industry has requested to change the form of duty and imposition of fixed form of duty.
 - xi. Without prejudice to their argument in support of fixed quantum of duty, the domestic industry has argued that should the Designated Authority still recommend benchmark duty, the benchmark for "any other deniers"
- Non injurious price is grossly low thus leading to unduly low protection to the domestic industry for the following reasons:
 - a. Authority is required to consider actual raw material and utilities consumption, and actual production for non-injurious price determination. The costs cannot be optimised.
 - b. Capital employed should be determined considering present value of fixed assets, or at the least gross value of fixed assets.
 - c. In particular, the non-injurious price determined for M/s Indian Rayon should be reviewed in view of (i) difference in production with changes in the product mix, (ii) higher consumption of utilities and lower capacity utilization due to product mix.

- d. Difference in production due to changes in the product-mix is different from “inefficient utilization of utilities or capacities”. The changes in the capacity utilization or utilities in the present case are not entirely because of alleged production inefficiencies. The same is largely due to change in product-mix. Further, in a situation where both product-mix differences as also so called inefficient utilization exists, the Authority will have to segregate the impact of these two factors even as per the new non-injurious price law.
 - e. The production weight used to determine weighted average of non-injurious price for the domestic industry should be the same as production used to determine non-injurious price of individual constituents of the domestic industry.
- The duties may be expressed in US\$. The previous two cases have ADD in terms of US\$ and no reasons have been given by any interested party why that form should be changed.

Examination by the Authority

- As regards the time granted to offer comments to the said disclosure statement, the Authority notes that due to time constraints to complete this investigation, a longer time period could not have been provided. However, the Authority notes that adequate time was provided to the interested parties in the instant matter throughout the investigation period and hence no prejudice would have been caused to them on this account.
- As regards inclusion of M/s Century Rayon information/data, the Authority notes that it had requested all known domestic producers of the subject goods to provide the requisite information/data. As M/s Century Rayon, being a domestic producer of the subject goods provide the requisite information/data, the same was considered for undertaking the injury analysis in terms of the AD Rules on the subject.
- As regards the Form of Duty; the Authority notes that there are significant differences within the product under consideration, particularly in terms of its weight and price. Therefore, anti-dumping duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case. It is further noted that lighter deniers are significantly costlier. Hence, considering the specific facts and merits of this case, the Authority considers that *ad valorem* form of duty would be most suited in the instant matter.
- As regards the contention that the Authority has power only to extend the period and duties cannot be enhanced; the Authority reiterates its view that it does not concur with the contention and considers that a proper reading of the relevant rules & regulations on the subject enables the Authority to modify the duties as well, based on the facts and merits of each case.
- As regards determination of constructed normal value and confidentiality issues thereof; the Authority notes that information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. As regards the international prices of raw materials and the reasonable profit margin, these have been disclosed.

- As regards injury related issues; the same have been appropriately addressed in the relevant section of these findings
- As regards review of Constructed normal value for China PR; the Authority has constructed the Normal value as per its practice and facts available on record; and the same has been determined considering the international prices of major raw materials, consumption factor of most efficient domestic industry and conversion cost of most efficient domestic industry.
- As regards VAT issue, the same has been appropriately considered while determining the dumping margins.
- As regards the Non-injurious price; the Authority has determined the same considering the relevant AD Rules on the subject and the facts of this case.

D. Misc. submissions made by interested parties and the Examination thereof

Submissions made by M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, China PR

5. M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, China PR, in brief, has submitted as follows:

- Claim of the Domestic Industry to Change the Form of Duty: it has been contended that Domestic Industry's claim regarding change in mode of duty or enhancement of duty is not found in either in the initiation notification or in application of domestic industry and hence grant of such claim by the Authority would be illegal and impermissible. Further, the claim cannot be allowed as the initiation in this case was a *suo motu* initiation.
- It has been contended that under Section 9A (5), Authority has power only to extend the period and duties cannot be enhanced. Recommendation to enhance duty would be outside scope of the initiation notification and would be without the authority of law. Reference in this regard has been made to the decision of Hon'ble Supreme Court in Rishiroop Polymers Pvt. Ltd. Vs. Designated Authority 2006 (196) E.L.T. 385 (S.C.).
- Confidentiality: It has been claimed that Domestic Industry kept substantial information as confidential without justification or specific order of Authority granting confidentiality. Consolidated aggregated information from two different companies ought to have been provided and could not have been kept confidential. Even information in public domain (Sales Value, Opening and Closing stock is easily available in the respective Annual Reports) is kept as confidential.
- Legality: It is disputed that the Association who filed the information for and on behalf of domestic industry had any power to verify the authenticity of the contents of the application. Besides, the certification must come from the legal entities and not the divisions namely, India Rayon, Kesoram Rayon and Century Rayon. The Association has presented the information selectively for certain companies and the reasons in support are not discernible from the response of the Association. Such selective information should not have been accepted. In support of this argument, it has been submitted that Indian Rayon is unit of Aditya Birla Nuvo, accounts for 16000 MT (38.45 % of the total

domestic capacity) of the total production capacity in the country; and Century Rayon and Kesoram Rayon are group companies of Century Textile and Industry Limited. As a matter of record, the response has been filed on behalf of Kesoram Rayon only. While one group company of Century Textile and Industry Limited with capacity of only 6500 MT (15.43% of the total domestic capacity) participates while the other group company with 19000 MT (46.12% of the total domestic capacity) is only a supporter.

- Non-submission of information of related party involved in the trade of the subject goods: It has been contended that the domestic industry has deliberately not furnished the response of Century Rayon.
- It has also been contended that the domestic industry's request for extension of the period of duties should be summarily rejected in terms of Rule 6(8) of AD Rules.
- It has been contended that production scenario of VFY has changed world over due to stringent environment control measures resulting in closures of entities e.g. Enka Elsterberg, Germany. As a result, it is stated that substantial production base of VFY is likely to be shifted to Asia, providing more opportunity to producers.
- Likelihood of continuance or recurrence of dumping and injury: It has been contended that the claim of likelihood and recurrence of dumping and injury is based on mere conjectures. Extension of duties on following grounds cannot be maintained. Reference has been made to Indian Spinner Association v. Designated Authority on the point of excessive production capacity contending that existence of surplus production capacity cannot be seen as imminent threat of injury. It has been contended that vulnerability is no ground for extension of duties.
- On issue of circumvention raised by domestic industry (imports of VFY under the garb of embroidery yarn) it has been contended that in sunset review proceedings under the Act and the Rules such claim cannot be examined.
- Case laws cited by the Domestic Industry: On the case laws cited by the Domestic Industry, it has been contended that none of the said case laws support the case of Domestic Industry.

Submissions made by Salem District Art Silk Merchants' Association:

6. The Association, in brief, has contended that there are several thousand small, cottage twisting factories, employing thousand of labourers carrying twisting; double twisting, dyeing, embroidering Viscose Filament Yarn in large quantity from 1950 onward and that if dyed twisted, double twisted embroidered VFY yarn is allowed to be imported then thousands of people employed in these cottage industries would be left jobless. It has been further contended that VFY – single thread – value added may be imported to the needs of consumers as a local manufacturers are not able to meet the demand and that anti-dumping duty should be levied on the imports of VFY twisted double twisted dyed and embroidered, if not banned, so as to safeguard the local small scale industry and huger no. of labourers employed therein.

Submissions made by the Domestic industry

7. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

In the original investigation the duty imposed was benchmark basis which failed to address the situation of dumping because of the increase in prices of raw material. The petitioner requests the Authority to revise the form of duty and impose separate benchmark for different types of the product under consideration, which would be able to address such situation as has been done in the mid-term review investigation.

Examination by the Authority

8. The misc. Issues raised by the interested parties have been examined as follows:

- As regards the Form of Duty; the Authority notes that the same is recommended on the basis of facts and merits of each case.
- As regards the contention that the Authority has power only to extend the period and duties cannot be enhanced; the Authority does not concur with the view and considers that a proper reading of the relevant rules & regulations on the subject enables the Authority to modify the duties as well, based on the facts and merits of each case.
- As regards Confidentiality; the Authority notes that information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claims wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient non-confidential version of the information filed on confidential basis.
- As regards the contention relating to the Association filing the information for and on behalf of domestic industry; the Authority notes that it had requested all the known domestic producers to submit the requisite information/data to enable it to undertake appropriate injury analysis. In response thereto, M/s Kesoram Rayon, M/s Indian Rayon and M/s Century Rayon filed their information/data. The same as verified by the Authority has been used in the present matter.
- As regards changing production scenario of VFY world over; the Authority notes that the same would not give licence to any producer to dump the subject goods into India and cause injury to the domestic producers.
- As regards the likelihood of continuance or recurrence of dumping and injury; the same have been appropriately dealt with in respective sections of this Disclosure statement.
- As regards the issue of circumvention raised by domestic industry; the Authority concurs with the view that this issue cannot be addressed in the present investigation.
- As regards the submissions made by Salem District Art Silk Merchants' Association; the Authority notes that the product under consideration in this investigation remains

unchanged as was decided in previous investigations. In the present matter, the Authority is required to assess whether the cessation of the anti-dumping duty in force would result into continuation or recurrence of dumping and injury.

- Other submissions made by the interested parties have been appropriately dealt with in respective sections of this Disclosure statement.

E. Product under consideration and Like article

Submissions made by the Domestic industry

9. The product under investigation in the original investigation and present review is “Viscose Rayon Filament Yarn of up to 150 Deniers (and \pm 4% permissible variation) which is also known as viscose filament yarn or VFY, Rayon Filament Yarn,
10. The goods produced by the domestic industry are like article to the imported product. There is no known difference in product under consideration produced by the Indian industry and subject goods exported from subject countries. The issue of product under consideration and like article was examined in detail by the Designated Authority in the original investigations and it has been held that the imported and domestic products are like article.
11. Present review investigation being a sunset review investigation, product under consideration remains the same as has been defined in the previous investigations.

Submissions made by M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, China PR

M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, China PR, in brief, has submitted that the Finer yarns are not manufactured by domestic industry.

Examination by the Authority

12. The product involved in the original investigation was considered as Viscose Rayon Filament Yarn up to 150 deniers (and \pm 4% permissible variation thereof) including mono filament yarn of less than 67 decitex also known as Viscose filament yarn or VFY, Rayon Filament Yarn, Art Silk Yarn, Cellulose Yarn or Rayon Yarn and includes all yarns made of 100% viscose yarns such as dyed yarn, flat yarn, microfilament micro yarn, twisted yarn (with the exclusion of embroidered yarn), doubled/ multiple ply yarn etc of VFY unless specifically excluded in this paragraph (also referred to as the subject goods hereinafter) originating in or exported from China PR. However, the subject goods do not include sewing thread, fur yarn, fire retardant yarn, engineered yarn, embroidered yarn and air texturised yarn. The product under consideration for the purposes of this review remains the same as was in the original investigation.
13. The subject goods are classified under Customs sub-heads 54033100, 54033200, 54033300, 54034110, 54034120, 54034130, 54034140, 54034150, 54034160, 54034170, 54034180, and 54034190 though they have been reported to have been

imported (in the investigations previously held on the subject) under other chapter heads as well (like chapter 55). Thus, Customs classifications are indicative only and in no way binding on the scope of this investigation.

14. The Authority notes that the subject goods produced by the domestic industry are like article to the imported product. There is no known difference in product under consideration produced by the Indian industry and subject goods exported from subject countries. As regards the contention that finer yarns are not manufactured by domestic industry; the Authority notes that the contention has not been substantiated. Besides, as per the relevant Rules & regulations on the subject, the domestic industry is only obligated to produce 'like article', which it does produce. Any claim with respect to any exclusion has to be specifically substantiated.

K. Scope of the Domestic Industry

Submissions made by the Domestic industry

15. The present investigation has been undertaken *suo motu* by the Authority. Petitioners satisfy the requirement of Standing to file the present petition. Further, Petitioners constitute 'Domestic Industry' within the meaning of Rule 2(b) of the AD Rules. However, this being a Sunset review investigation, there is no requirement to examine the standing under the AD Rules.

Examination by the authority

16. Rule 2(b) under the AD Rules provides as follows:-

"domestic industry" means the domestic producers as a whole engaged in the manufacture of the like article and any activity connected therewith or those whose collective output of the said article constitutes a major proportion of the total domestic production of that article except when such producers are related to the exporters or importers of the alleged dumped article or are themselves importers thereof in such case the term 'Domestic Industry' may be construed as referring to the rest of the producers.

17. The present review investigation has been initiated on *suo motu* basis. M/s Kesoram Rayon, M/s Indian Rayon responded to the initiation notification. Subsequently, M/s Century Rayon also filed the requisite information/data to undertake the injury analysis. As per information available on record, M/s Kesoram Rayon, M/s Indian Rayon and M/s Century Rayon account for a major proportion of the production of the subject goods in India. Thus, these domestic producers of the subject goods satisfy the requirement of 'domestic industry' within the meaning of the AD rules.

G. Dumping Determination

Submissions made by the Domestic Industry

18. The domestic industry, in brief, has contended as follows:

- a) Market economy treatment claim of Yibin Heist Fiber Limited Corporation should be rejected being a State owned company.
- b) Individual dumping margin and individual duty should not be given to Yibin Heist Fiber Limited Corporation as the whole group has not responded and therefore, the response of the related company needs to be rejected.
- c) They have considered India as a market economy country for determination of Normal Value. India is an appropriate surrogate country for Chinese producers. The normal value needs to be constructed for the exporters/producers from China PR based on international raw material prices, consumption norms of the industry, estimates of conversion costs, selling, general & administrative expenses and reasonable profit margin.
- d) Considering the Normal Value and the Export Price determined, Dumping Margin PCN wise has been calculated. It would be seen that the Dumping Margin is not only beyond *de-minimis* limits but is also substantial.

Submissions made by other interested parties

19. None of the other interest parties have made any submission in respect of “dumping determination”.

Normal value

20. The Authority sent questionnaires to the known exporters/ producers from the subject country, advising them to provide information in the form and manner prescribed. In response thereto, only M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, a producer & exporter from China PR has co-operated in this investigation by filing their questionnaires’ response.
21. The Authority notes that in the past three years China PR has been treated as a non-market economy country in anti-dumping investigations by India and other WTO Members. China PR has been treated as a non-market economy country subject to rebuttal of the presumption by the exporting country or individual exporters/producers in terms of the AD Rules.
22. As per Paragraph 8 of Annexure I of the AD Rules, the presumption of a non-market economy may be rebutted, if the exporter(s) /producer(s) from China PR provide information and sufficient evidence on the basis of the criteria specified in sub paragraph (3) of Paragraph 8 and establish the facts to the contrary. The co-operating exporters/producers of the subject goods from People’s Republic of China are required to furnish necessary information/sufficient evidence as mentioned in sub-paragraph (3) of paragraph 8 in response to the Market Economy Treatment questionnaire to enable the Authority to consider the following criteria as to whether:
 - a) the decisions of concerned firms in China PR regarding prices, costs and inputs, including raw materials, cost of technology and labour, output, sales and investment are made in response to market signals reflecting supply and demand

- and without significant State interference in this regard, and whether costs of major inputs substantially reflect market values;
- the production costs and financial situation of such firms are subject to significant distortions carried over from the former non-market economy system, in particular in relation to depreciation of assets, other write-offs, barter trade and payment via compensation of debts;
 - such firms are subject to bankruptcy and property laws which guarantee legal certainty and stability for the operation of the firms and
 - the exchange rate conversions are carried out at the market rate.
23. The Authority notes that consequent upon the initiation notice issued by the Authority; M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, a Chinese producer/exporter has submitted the questionnaires' response including the market economy questionnaire's response and sought to rebut the non-market economy presumption. However, during the course of on-the spot investigation at the premises of the Chinese company, the company was not able to substantiate its MET claim and hence it decided to forego the same. The questionnaires' response were perused, wherein It has been, inter alia, stated that the goods sold in domestic market and goods exported to India are almost identical.

Determination of Normal value in respect of Exporters / Producers from China PR

24. As the only co-operative exporter/producer from China PR has not been able to rebut the MET presumption and instead has chosen to forego its MET claim and no other Chinese producer/exporter has submitted the questionnaires' responses and sought to rebut the MET presumption; the Authority has determined the Normal value in China PR on the basis of Para-7 to Annexure-I to the AD Rules.

25. Para 7 of Annexure I of the AD Rules provides that

"In case of imports from non-market economy countries, normal value shall be determined on the basis of the price or constructed value in the market economy third country, or the price from such a third country to other countries, including India or where it is not possible, or on any other reasonable basis, including the price actually paid or payable in India for the like product, duly adjusted if necessary, to include a reasonable profit margin. An appropriate market economy third country shall be selected by the designated authority in a reasonable manner, keeping in view the level of development of the country concerned and the product in question, and due account shall be taken of any reliable information made available at the time of selection. Accounts shall be taken within time limits, where appropriate, of the investigation made in any similar matter in respect of any other market economy third country. The parties to the investigation shall be informed without any unreasonable delay the aforesaid selection of the market economy third country and shall be given a reasonable period of time to offer their comments".

26. As the presumption of non-market economy as enshrined in para 8(2) of Annexure 1 of the AD Rules remains un-rebutted; the Authority, therefore, has determined the Normal value in accordance with para 7 Annexure I of the AD Rules. In absence of sufficient information on record regarding the other methods as are stipulated in para 7 of Annexure I of the AD Rules, the Authority has determined the Normal value by adopting the method "any other reasonable basis".
27. The Authority has therefore constructed the Normal value for China PR considering the international prices of major raw materials such as caustic soda and carbon disulphide as Rs. 10.35 and Rs. 26.71 per kg respectively, wood pulp prices are as per the imported wood pulp price of domestic industry, purchase consumption factor of most efficient domestic industry and conversion cost of most efficient domestic industry. Besides a reasonable profit margin of 5% has been adopted. The Normal value so determined works out as *** USD/Kg.

Export Price

M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation

28. The Authority notes that only one Chinese producer/exporter, namely M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, has submitted the questionnaires' response. On a perusal of the response, a deficiency letter was sent to the company. It was noted that the company has clubbed certain adjustments under the head "other adjustments" and was thus advised to segregate the same and reflect it in the revised Appendix 2 format. The company explained that they had clubbed forwarder's expenses; Customs clearance; Document fee and Security fee. The company accordingly submitted a revised Appendix 2 segregating these adjustments. It has been noted that the company has exported *** MT of the subject goods to India during the POI. The adjustments have been claimed on account of inland freight, overseas freight, marine insurance, forwarder's expenses; Customs clearance, port expenses & document fee, Security fee and bank charges. During the course of on-the-spot verification, it was noted that no adjustment for credit costs were made, despite the fact that credits were extended by the company to its buyers. Hence, the credit costs have also been adjusted. As regards other adjustments, the same as verified during the course of the on-the-spot verification have been accepted and are being allowed. The net export price so worked out has been determined as *** USD/Kg.

Non-co-operative exporters/producers

29. As no other exporter / producer has provided any information that can be used for determination of the export price, the Authority has determined the 'Export Price' on the basis of 'facts available' on record.

14. Dumping Margin

30. On the basis of the Normal value and Export price so determined at ex-factory level, the dumping margin during the POI for all exporters/producers from China PR has been determined as follows:

Exporter/producer	Country	Dumping Margin (USD/Kg.)	Dumping Margin
M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation	China PR	***	2%-12%
Any other	China PR	***	10%-20%

I. Continuation or recurrence of dumping:

Submissions made by the domestic industry:

31. The domestic industry has, in brief, contended as follows:

- a) Dumping margin determined in all previous investigations as well as current investigation relating to the product is not only above de minimis levels but also substantial.
- b) The volume of imports from China PR has remarkably increased despite imposition of anti dumping duty since the original investigation.
- c) There is availability of freely disposable present and potential capacities with the foreign producers in China PR.
- d) Imports from China PR are undercutting the prices of the domestic industry even after the existing anti dumping duty.
- e) China's current exports to world are much higher than gross demand in India. This implies that China PR independently has the potential to meet the whole demand of the product concerned in India.
- f) The Indian market for the product under consideration is highly price sensitive. Such being the case, availability of such low priced imports from China PR in the market would definitely cause an adverse impact over the Domestic Industry.
- g) The subject country holds a significant market share in the Indian Market inspite of Anti-dumping duty inexistence.
- h) There exist significant capacities for producing the subject goods in China PR to address the demand in their domestic market as well as export at the same time in huge volumes.
- i) Export sale of the product under consideration from China to world is significant.
- j) As many producers of VFY in China PR also manufacture embroidery yarn, these producers have started exporting VFY in the name of embroidery yarn so as to avoid payment of anti-dumping duties imposed on imports of VFY.

32. Continuation of Dumping

- It has been contended that in a situation where there are continued exports at dumped prices from a subject country, then the same is likely to continue. In case exports to India are not at dumped prices, it may be further examined whether the

exports to third countries are at dumped prices. Besides, reasonableness and reliability of the export prices may also be assessed. In case exports to India are at dumped prices; it is likely that the exporters would continue to export the subject good at dumped prices in case of cessation of anti-dumping duties.

- In the present case, the exporters and producers of China PR continued to export the subject goods at dumped prices, even after imposition of the dumping duties. Thus, a reasonable apprehension exists that cessation of anti-dumping duties in the present case is likely to result in intensified dumping from China PR in increased volumes.
- The domestic industry has further contended that there has been a continuous import in to India from the subject country that too at increased levels. Likelihood of future dumping can be ascertained based on the fact that exports from the subject country are still at dumped price which is resulting in significant dumping and price undercutting. There is a reasonable belief that after cessation of the current duty, exporters/producers of the subject country would increase the exports of the subject goods and cause injury to the domestic industry. Thus, cessation of present duty in force is likely to result in significant dumping of the subject goods in the Indian market.

33. Price attractiveness of Indian market

- It has been further contended that the subject goods are exported from China PR to India at prices, which are significantly below than the net selling price of the domestic industry. Thus, there is likelihood of further increased imports of the subject goods from the subject country, on cessation of the anti-dumping duty in force.

34. Excessive Unutilised Production Capacities maintained by the China PR

- It has been contended that China PR holds excessive unutilised capacities of producing the subject goods. Comparing the demand of the subject goods in China with the capacity of China PR, it has been contended that China PR holds enough unutilised and surplus capacity to capture significant Indian market of the subject goods. The printouts of the web-sites of the Chinese Association of the subject goods have been enclosed as evidence showing unutilised capacity of the subject goods in China PR. Thus, there is a positive likelihood that the exporters and the producers of China PR would intensify dumping as soon as the duties in force are revoked.

Viscose Filament Yarn demand in China (Unit:KT)					
Year	2007	2008	2009	2010	2011
Capacity	218.5	218.5	218.5	218.5	218.5
Production	219.4	165.8	190	197	172
Capacity Utilization	100%	76%	87%	90%	79%

Unutilized capacity	(0.90)	52.70	28.50	21.50	46.50
Import volume	3.2	2.4	6.7	6.8	5.2
Export Volume	69.7	45.9	69.5	86.7	77.5
Apparent demand	152.9	122.3	127.2	117.1	99.7
Surplus capacities	65.6	96.2	91.3	101.4	118.8

- It has been contended that the current import level of the product concerned is likely to increase substantially due to the existence of unused capacity and the slackening of the demand of the subject goods in China PR. In addition, it has been contended that further increased imports at dumped prices from the country concerned is likely lead to a recurrence of injury to the domestic industry, should measures be allowed to lapse.
35. Closed Units: it is relevant to note that Baroda Rayon and NRC were closed down with capacities 4500 MT and 16000 Mt respectively in the year 2008. The Chinese imports entering the market in that period were able to capture the gap created due to this closure.

Sn.	Particulars	MT
1	Total Capacity	62000
2	Closed Unit capacities	20500
3	Present Capacities of DI	41500

36. It has been further contended that now with ever increasing demand and imports, the domestic industry is left with two options which are as follows:

- Domestic industry matched NSR with landed price: the below analysis shows the impact on domestic industry if it sells at price equal to landed price:

Sn.	Particulars	Units	POI	If NSR to Match Landed Value
1	Volume	MT	23,816	23,816
2	sales Price	Rs/Kg.	***	***
		Indexed	100	92
3	Cost of sales	Rs/Kg.	***	***
			100	100
4	Profitability	Rs/Kg.	***	***
			100	28
5	Profits	Rs. Lacs	***	***
			100	28

It has been contended that if the domestic industry matched its prices with that of landed price, the profitability would reduce significantly. Also there would be significant decline in cash profits and return on investments of the domestic industry.

- Domestic industry maintain its selling price: Cessation of Anti-dumping duty would likely to lead to further increase in imports with intensified dumping. If domestic industry maintains its prices, the consumers would shift to Chinese goods as they being cheaper. This would lead to deterioration in the market share of the domestic industry and consequently sales, production and capacity utilization would decline leading to injury to the domestic industry. The likely impact can be seen from below:

Particulars	MT
Surplus Capacities in China	118,800
Demand in India	34414
Sales of DI	Nil

- It would thus be seen that there is a likelihood of dumping and injury in the event of cessation of Anti-dumping duty in force.

Submissions made by M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation

37. M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, in brief, has contended as follows:

- a) The claim of likelihood of dumping and injury to the responding industry is based on mere conjectures.
- b) Dumping in third country is not a valid ground in law.
- c) Mere surplus capacity of exporter cannot lead to a conclusion that there is imminent danger of material injury.

Examination by the Authority

38. In terms of relevant provisions, the following aspects need to be examined in a Sunset review investigation:

- Whether the dumping is continuing; and if so, whether it is likely to continue in the event of cessation of anti dumping duties;
- In case where dumping did not continue, whether the dumping would recur in the event of cessation of anti dumping duties;

39. The AD Rules do not prescribe any specific methodology to examine the likelihood of dumping in a Sunset review investigation. However, in case there is a significantly positive dumping margin in respect of exports of the subject goods during the POI; then it is likely that dumping would continue in case of cessation of anti-dumping duty in force, unless the facts state otherwise. However, in case there have been no exports of the subject goods during the POI; then it would not mean that there is no likelihood of recurrence of dumping in case of cessation of anti-dumping duty in force. In such cases, other relevant factors are required to be examined, for instance, evidence, if any, regarding propensity for dumping, that may be determined by considering the exports of the subject goods in third country markets.
40. In the instant matter, the subject goods have been imported from the subject country during the period of investigation in significant volumes. In fact, the volumes of the subject goods from the subject country have been increasing over the injury period. It is noted that these goods have been exported at dumped prices and are significantly undercutting the prices of the domestic industry. In case, the anti-dumping duties are allowed to expire, the volume of the subject goods at dumped prices is likely to increase. This view is further buttressed, considering the unutilised capacities to produce the subject goods in China PR and the slackening demand of the subject goods in China PR, which has not been disputed by any interested party.
41. In view of the above, the Authority notes that the subject goods are likely to continue to be dumped, if the present anti dumping duties is allowed to cease. Besides, cessation of the anti-dumping duty is likely to lead to increased volumes of imports of the subject goods from the subject country at dumped prices.

J. Injury

Submissions made by M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, China PR

42. M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation, China PR, in brief, has submitted as follows:
- **Improvement in all injury factors:** It has been contended that all injury factors are showing considerable improvement even as per incomplete information filed by the domestic industry; there is no case of current or likely injury which gets further substantiated from the fact that domestic industry has not even claimed any price underselling in their response. The analysis of the injury parameters during the POI would reveal the following:
 - a. Demand of subject goods has shown increase of 27% from the base year. This as per the exporter shows that demand has not increased as claimed by domestic industry.
 - b. The Market share in Demand from China PR has increased (20%) as compared to base year but that same is entirely due to the increase in demand and the quantities left unattended by the domestic producers. The domestic industry failed to increase its capacity in proportion to the demand, as it worked at more than 100% of capacity.

Imports hence were inevitable catering to new and additional demand. In present case question of decrease or increase of market share does not arise as increase in demand and increase in import quantity are almost the same.

- c. Price Undercutting and Price Underselling are per se not factors of injury. In support reliance is placed on Appendix II to the Anti-dumping Rules. Reference has been made to the case of Hydrofluoric Acid from China PR.
- d. Selling price kept on increasing till 2009-10, which remained at the same level during the POI as compared to previous year. Thus, no injury can possibly be claimed on account of declining sales prices. Analysis of the selling prices and the costs clearly establish that the Domestic Industry has been able to increase its profitability enormously. The sales volume of domestic industry as per the exporter remained more or less same due to lack of enhanced capacities.
- e. For profitability, Domestic Industry has provided two figures namely, Profit and PBIT which also shows no injury.

Submissions made by the domestic industry

The domestic industry, in brief, has submitted as follows:

- a) The demand of the product under consideration has increased throughout the injury period;
- b) Imports of the product under consideration have increased throughout the injury period with a significant increase during 2009-10 and thereafter in POI. However the imports from third countries have declined during POI.
- c) Imports increased significantly in absolute terms despite imposition of anti dumping duties.
- d) Imports increased significantly in relation to production and consumption of the product in India.
- e) Share of imports has remained very significant in relation to demand/ consumption in India.
- f) The significant volume of Chinese imports is despite significant capacities and production in India.
- g) The market share of China in total imports has significantly increased throughout the injury period and accounts for 83% of total imports during POI whereas that of other countries declined throughout the injury period.
- h) Even after the existence of the current anti-dumping duty, imports from the subject country are undercutting the domestic prices.
- i) The production of the domestic industry declined throughout the injury period with a significant decline during POI.
- j) The capacity utilization of the domestic industry also showed the same trend as that of production.
- k) The sales of the domestic industry declined throughout the injury period.
- l) Market share held by Chinese producers in demand kept on increasing throughout the injury period whereas, share of the Domestic Industry declined constantly in the injury period.

- m) The profit of the domestic industry increased till 2009-10. The same however declined in POI.
- n) Return on investment and cash profits have followed the same trend as profitability. The return on investment and cash profits of the domestic industry increased till 2009-10. The same however declined in POI.
- o) The employment levels declined during POI. Wages paid also declined during POI. The productivity per day showed a declining trend during POI.
- p) The level of inventories have declined till 2009-10 but thereafter significantly increased during POI clearly showing the inability of domestic industry to sell its products in the market owing to low priced imports from subject country.
- q) Growth of the domestic industry in terms of sales, production, capacity utilization, profits, return on investment and cash profits all are adverse.
- r) The present situation clearly establishes that the imports would further increase from the subject country which will further intensify dumping of the subject goods in the Indian market in the event of revocation of anti-dumping duties.
- s) The reasons for increase in imports are (a) product types involved (b) non identification of product features in previous investigations (c) Benchmark form of duty becoming ineffective.
- t) Net Fixed Assets as a basis for determination of capital employed is incorrect and the Authority should consider net present value of the plants or at least gross fixed assets.
- u) The amount of return on capital employed should be considered having regard to the age of the plant.
- v) The fixed expenses should not be optimized based on production in some other year. The production of the product over the years is directly dependent on the product mix and therefore it would not be appropriate to conclude that the company has inefficiently utilized production capacities. The petitioner requests Authority to consider the actual level of plant utilization in the period of investigation

Examination by the Authority

- 44. As regards contentions relating to improvement in all injury factors: the same have been appropriately dealt with in herein below:
- 45. The Authority notes that AD Rules do not require that the domestic industry must meet the demand of the user industry for getting redressal to its injury on account of dumping.
- 46. The Authority notes that the information provided by interested parties on confidential basis was examined with regard to sufficiency of the confidentiality claim. On being satisfied, the Authority has accepted the confidentiality claim wherever warranted and such information has been considered as confidential and not disclosed to other interested parties. Wherever possible, parties providing information on confidential basis were directed to provide sufficient confidential version of the information filed on confidential basis.
- 47. The Authority notes that it has adopted its consistent practice to examine and evaluate the injury data over the injury period. However, in a GDS investigation,

the Authority assesses whether the cessation of the duties is likely to lead to continuation or recurrence of dumping and consequent injury.

48. The Authority has examined the injury parameters objectively taking into account the facts and the submissions made by the interested parties as follows:
49. Annexure-II of the AD Rules provide for an objective examination of both (a) the volume of dumped imports and the effect of the dumped imports on prices in the domestic market for the like articles; and (b) the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. With regard to the volume effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been a significant increase in dumped imports, either in absolute term or relative to production or consumption in India. With regard to the price effect of the dumped imports, the Authority is required to examine whether there has been significant price undercutting by the dumped imports as compared to the price of the like article in India, or whether the effect of such imports is otherwise to depress the prices to a significant degree, or prevent price increases, which would have otherwise occurred to a significant degree.
50. For the purpose of current injury analysis the Authority has examined the volume and prices effects of imports of the subject goods from the subject country on the domestic industry and its effect on the prices and profitability to examine the existence of injury and causal link between dumping and injury, if any.

Import volumes and market share

51. The volume of dumped imports has been determined on basis of the transaction-wise data as obtained and furnished by the domestic industry from IBIS. It is further seen from the co-operative exporter's response that the export transactions as reflected by it are not mentioned in the IBIS data. Hence, the total volumes of imports have been considered by adding co-operative exporter volume in POI in IBIS data for computing the total volume of imports. The volume of dumped imports and their share in imports from various countries and production & consumption in India during the injury period are tabulated below:

Import Volume

	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Import Volumes (MT)				
From China PR	1571	4739	7168	13874
Imports from China PR (Trend)	100	302	456	883
Imports from Other countries	722	1915	2366	1769
Total Imports	2293	6654	9534	15643
Total Imports (Trend)	100	290	416	682
Share of China in Imports %	69%	71%	75%	89%

Demand/ Consumption (MT)	27124	31548	34109	39459
Change in Demand as compared to previous year		16.31%	8.12%	15.69%
Share of China PR in Demand in India %	5.79%	15.02%	21.01%	35.16%
Production (MT)	34215	33958	34886	34258
Imports from China PR in relation to domestic production (%)	4.59%	13.96%	20.55%	40.50%

- a) It is seen that the imports of the product under consideration have increased throughout the injury period with a significant increase during 2009-10 and thereafter further in the POI. Whereas the imports from other countries have declined during the POI.
- b) The market share of China PR in total imports of the subject goods into India has significantly increased throughout the injury period and accounts for nearly 83% of the total imports during the POI, whereas the market share of other countries has declined over the injury period.

Price effect of imports

52. The net sales realization (NSR) of the domestic industry has been arrived at by considering its selling price, excluding taxes & duties, rebates, discounts & commissions and freight & transportation.

		Co-operative Exporter/producer	China as a whole
CIF Price	US(\$)/Kg	***	***
Custom Duty	US(\$)/Kg	***	***
Cess	US(\$)/Kg	***	***
Landed Price	US(\$)/Kg	***	***
NSR	US(\$)/Kg	***	***
Undercutting	US(\$)/Kg	***	***
		5-15%	1%-10%

53. From the above it is seen that the Landed price of the subject goods into India from China PR has been lower than the NSR of the domestic industry resulting in price undercutting.

Price Underselling

		Co-operative	China as a
--	--	--------------	------------

		Exporter/producer	whole
CIF Price	US(\$)/Kg	***	***
Custom Duty	US(\$)/Kg	***	***
Cess	US(\$)/Kg	***	***
Landed Price	US(\$)/Kg	***	***
Non Injurious Price(NIP)	US(\$)/Kg	***	***
Price Underselling	US(\$)/Kg	***	***
		5-15%	1%-10%

54. From the above it is seen that the Landed price of the subject goods into India from China PR has been lower than the NIP determined for the domestic industry resulting in price underselling.

Magnitude of margin of dumping

55. It is noted that the subject goods continue to be exported at dumped prices and the dumping margins have been significant.

Economic Parameters relating to the domestic industry

56. Annexure II to the AD Rules requires that a determination of injury shall involve an object examination of the consequent impact of these imports on domestic producers of such articles. The AD Rules further provide that the examination of the impact of the dumped imports on the domestic industry should include an objective and unbiased evaluation of all relevant economic factors and indices having a bearing on the state of the industry, including actual and potential decline in sales, profits, output, market share, productivity, return on investments or utilization of capacity; factors affecting domestic prices, the magnitude of the margin of dumping; actual and potential negative effects on cash flow inventories, employment, wages, growth, ability to raise capital investments.

Production, sales volumes, capacity and capacity utilization

57. The status of the domestic industry with regard to production, sales volumes, capacity and capacity utilization is seen as under:-

Particulars	Unit	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Capacity Utilisation					
Capacity	MT	41500	41500	41500	41500
VFY Production	MT	41,559	41,565	42621	41,702
Production PUC upto 150 deniers	MT	24,742	25,175	24,717	24,415

Capacity Utilization	%	100.14%	100.16%	102.70%	100.49%
Domestic Sales	MT	24,831	24,895	24,575	23,816
Increase/decrease over previous year (%)			0.25%	-1.29%	-3.09%
Export Sales	MT	1,956	676	518	317
Total sales	MT	26,788	25,571	25,093	24,133
Demand (MT)		27,124	31,548	34,109	39,459
Market share in Demand (%)		91.55%	78.91%	72.05%	61.16%

58. The Authority observes that –

- The production has been optimum during the injury period and full capacity has been utilised during the injury period.
- Not much change in sales of domestic industry was observed, except during the POI.

Stocks

59. The inventories position of the domestic industry has been as follows:-

	2007-08	2008-09	2009-10	In MT POI
Opening Stock	***	***	***	***
Closing Stock	***	***	***	***
Average Stock	1709.5	978	791.5	1209
Average Stock(Index)	100	57	46	71

60. It is seen that the levels of inventories have declined till 2009-10 but thereafter the inventories increased in the POI. Apparently, the reduction in the sales quantity during the POI has resulted in the increased inventories as against the previous year.

Market share

61. The market share of the domestic industry and that of China PR in demand of the subject goods in India has been as follows:-

Particulars	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Market share of the domestic industry in Demand (%)	91.55%	78.91%	72.05%	61.16%
Share of China PR in Demand in India %	5.79%	15.02%	21.01%	35.16%
Market share (lost)/gained by domestic industry		-16%	-10%	-4%

62. It is observed that as the domestic industry has utilized its full potential to produce, increase in the demand has resulted in the increase in the market share of Chinese exporters/producers and relative reduction in the market share of the domestic industry. It is, however, noted that the market share of the subject country in the POI increased in absolute terms as compared to the base year.

Profits

63. Profits earned by the domestic industry from the sales of the subject goods in the domestic market are as follows: - .

	2007-08	2008-09	2009-10	POI
	***	***	***	***
Profit before tax (Total profit) (Rs. in Lacs)				
Profit before tax (Total profit) (Index)	100	163.39	730.06	617.53
	***	***	***	***
Profit before tax (Profit per unit) (Rs. /Kg)				
Profit before tax (Profit per unit) (Index)	100	170.42	1557.28	1312.68

64. It is noted that the profit of the domestic industry increased till 2009-10 but the same has, however, declined in the POI.

Wages

65. The wages paid by the domestic industry and incidence of wage per unit of production has been as under:

Rs. In Lacs	2007-08	2008-09	2009-10	POI
	***	***	***	***
Wages (Rs. Lacs)				
Wages (Rs. Lacs)(Index)	100	110	124	125
	***	***	***	***
Wages per unit of production (Rs./kg)				
Wages per unit of production (Index)	100	111	122	125

66. It is observed that the total wages and wages per unit increased throughout the injury period.

Employment

67. The number of employees for the subject goods is tabulated below:-

	2007-08	2008-09	2009-10	POI
No. of employee	***	***	***	***
No. of employee (indexed)	100	101	103	99
Productivity Per employee	***	***	***	***
Productivity per day	71	72	71	70

68. It is noted that the employment levels declined slightly during the POI as compared to the base year. Whereas the productivity per day was almost constant during the injury period.

Return on investment

69. Return on investment has been identified for PUC on the basis of production of the subject goods length-wise (in kilometre), which is as under:

	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Capital employed (Rs. In Lacs)	***	***	***	***
Capital employed (indexed)	100	110.06	108.69	106.04
Profit before interest & taxes (Rs. In Lacs)	***	***	***	***
Profit before interest & taxes (indexed)	100	160.11	730.06	617.53
Return on investment (%)	0-5	5-10	20-25	20-25

70. It is observed that while the capital employed decreased each year, but the return on investment increased each year till 2009-10, but a decline in ROI was observed in the POI as compared to the previous year.

Effect on Cash flow

71. The status of cash profits earned by the domestic industry over the injury period has been as under:

	2007-08	2008-09	2009-10	POI
Cash Profit (Rs. In Lacs)	***	***	***	***

Cash Profit (indexed)	100	124	591	498
Profit before tax (Profit per unit)	***	***	***	***
Profit before tax (indexed)	100	171	1,541	1,259

72. It is noted that the cash profit has increased throughout the injury period, but it has fallen during the POI as compared to the preceding year.

Growth

73. It is observed that the growth of the domestic industry in terms of sales, production, capacity utilization, profits, return on investment and cash profits etc have increased *vis a vis* the base year but have declined as compared to the preceding year. Apparently, the anti-dumping duty in force has provided relief to the domestic industry.

Conclusion on continuation of injury

74. It is observed that –

- (a) The imports of the subject goods have increased significantly as compared to the base year and as well as when compared to the original investigation period.
- (b) The increase in the imports from China PR has been there, in spite of the anti dumping duties in force.
- (c) The share of imports has increased throughout the injury period in line with demand/ consumption in India.
- (d) The market share of the domestic industry has declined throughout the injury period due to increase in the demand and considering that full capacity was being utilized by the domestic industry.
- (e) The performance of the Domestic Industry improved in terms of capacity utilization, profitability etc. has improved.
- (f) The inventories levels of the domestic industry have increased during the POI.
- (g) The imports have been significantly undercutting the prices of the domestic industry. Besides, these imports are significantly below the NIP determined for the domestic industry as well.

75. It has already been noted that the subject goods continue to be dumped into India. The volume of dumped imports is likely to further increase from the subject country, considering that there are significant unutilised capacities of the subject goods in China PR. Besides, there has been slackening of demand of the subject goods within China PR, which is further likely to lead to exploration of other markets by the Chinese exporters/producers. The increased demand of the subject goods in India is likely to attract these goods. Considering that the Chinese goods continue to be dumped; any cessation of the anti-dumping duties in force is likely to lead to increased dumping of the subject goods in the Indian market.

76. It appears that the domestic industry has not been suffering any material injury as of now due to the presence of anti-dumping duty in force. It is also noted that two

domestic producers have stopped their production in the recent past leading to a scenario where the domestic industry could continue to utilize its capacities and as well realize a fair price in the market. But if it were to match the prices of the landed value of the subject goods from China PR, the same would have a significant adverse impact on the price parameters of the domestic industry. Alternatively, it would stand to significantly lose its market share leading to adverse impact on volume parameters.

K. Likelihood of Recurrence of Injury

Submissions made by the domestic industry

77. The domestic industry, in, brief has contended as follows:

- For price undercutting, injury margin – Followings are relevant:
 - a. Co-operating exporters – Price undercutting and injury margin is required to be determined first for responding exporters and then for non cooperating exporters. Questionnaire response before the Authority cannot be ignored for the purpose.
 - b. The responding exporter should undisputedly have positive dumping margin, positive price undercutting and positive injury margin. If the facts claimed are different/contrary, we would provide appropriate evidence. However, based on their market intelligence, the undercutting and injury margin for the responding exporter is in excess of Rs.25-30 kg.
 - c. Non cooperating exporters – The dumping margin for non-cooperating exporters cannot be lower than cooperating exporters. Thus, the dumping margin for non-cooperating exporters must also be positive and in fact higher than cooperating exporter.
 - d. The export price used for determining dumping margin on one hand and price undercutting and injury margin on other hand cannot be different. In fact, the Authority has considered lowest export price for non-cooperating exporters in several cases.
 - e. Since export price for non-cooperating exporters cannot be higher than export price cooperating exporters, it follows that the price undercutting and injury margin for non-cooperating exporters cannot be lower than cooperating exporters.
- The mere fact that the petition contained an error and claimed lower price undercutting does not mean that the Authority shall now not determine higher price undercutting and injury margin. Unbiased Authority is required to determine correct parameters, and if there are errors committed by the domestic industry, the same are required to be rectified by the Authority (particularly when the domestic industry has now pointed out these during the course of verification). Thus, mere fact of lower price undercutting or injury margin does not mean that the Authority cannot decide higher injury margin.
- There are significant imports of A Grade and super-A grade imports of VFY. Strictly speaking, the Authority should consider selling price of the

domestic industry for A grade material only for determining price undercutting in these exports. The price difference between A/Super-A category and other categories is quite significant.

- Volume of exports from China has significantly increased.
- Chinese producers are having significant unutilized capacities - the current capacities with the Chinese producers are 218,000 MT. As against this, the Chinese production has been declining.
- The Chinese consumption of VFY is falling and therefore the Chinese producers are likely to dump aggressively in the event of cessation of anti dumping duty.

The information clearly shows likelihood of dumping in case of cessation of Anti-dumping duties. It is, thus, evident that the information clearly shows likelihood of dumping in injury.

Examination by the Authority

78. In the present case the growth of the domestic industry in terms of sales, production, capacity utilization, profits, return on investment and cash profits etc have increased *vis a vis* the base year but have declined as compared to the preceding year. With the imposition of Anti-dumping duty, the domestic industry was able to improve its performance.
79. It has been noted that the imports of the subject goods and market share thereof of the subject country have increased during the injury period inspite of antidumping duty in force.
80. The domestic industry has provided information/data that shows that producers/exporters of the subject goods in China PR are having excessive production capacities. Besides, the domestic industry has also provided information/data regarding fall in demand in China PR resulting in lower capacity utilisation of the subject goods in China PR.
81. It has been observed that during the injury period, inspite of duty in force, imports of the subject goods from China PR increased significantly leading to increased market share *vis a vis* the total demand as well as total imports. In case of cessation of the existing anti-dumping duty, the Chinese exporters/producers are likely to eye the Indian market and further increase their export volumes to India at dumped prices. The present dumping of the subject goods is likely to lead to increased dumping and that is likely to cause injury to the domestic industry, which at present is having the desired benefit of the anti-dumping duty in force.
82. Since, the present anti-dumping duty is on the basis of reference price; apparently the same is effective as the landed values have been generally higher than the reference price. If the anti-dumping duties are allowed to cease, then the already dumped imports from China PR may come at still lower prices. In such an event, the domestic industry may have to either match the landed prices or thereby have an adverse impact on its price parameters or lose significantly its market share and there have an adverse impact on the volume parameters. In either event, the

cessation of the anti-dumping duty is likely to lead to recurrence of material injury to the domestic industry.

83. Furthermore, it is likely that, in order to be able to significantly increase their sales, using the huge spare capacities, and the Chinese exporters/producers are likely to attempt and gain a substantially increased market share in the Indian Market. And as the Chinese exporters/ producers are even presently undercutting the prices of domestic industry, the situation is likely to worsen to the detriment of the domestic industry. The below analysis shows the situation of domestic industry if it sells the subject goods at landed price:

Particulars	Unit	POI
Present undercutting	Rs./Kg	***
Present NSR	Rs./Kg	***
NSR after matching landed price	Rs./Kg	***
Cost of Production	Rs./Kg	***
Existing Profit	Rs./Kg	***
Profit after matching of NSR with landed price	Rs./Kg	***
Loss of Profit per Kg	Rs./Kg	***

84. Considering that the subject goods continue to be dumped; there is likelihood that cessation of the anti-dumping duty is likely to lead to increased imports of the subject goods from the subject country at somewhat similar prices, which would significantly adversely impact the domestic industry.
85. The cessation of the anti-dumping duty is likely to put pressure on the prices of the subject goods being produced by the domestic industry. Thus, it is likely that cessation of the anti-dumping duty would encourage the Chinese exporters/producers to significantly increase their volume of exports at dumped prices, which are already significantly undercutting the domestic industry's prices.

L. Causal Link

86. The Authority has examined the submissions with regard to the significance and relevance of causal link in a Sunset review investigation. It is important to note under Section 9A(5), the Authority is required to examine the likelihood of dumping and injury and the need for continuation of duties irrespective of whether there have been any imports of the product under consideration during the review investigation period or not. Notwithstanding this, it was examined whether other parameters listed under the AD Rules have caused injury to the Domestic Industry.

- (a) **Changes in the patterns of consumption:** - Since the demand for the product has increased during the injury period, it indicates that the pattern of consumption with regard to the product under consideration has undergone a positive change.
- (b) **Trade restrictive practices of and competition between the foreign and domestic producers:** - As per information available on record, there is no trade restrictive practice, which could have contributed to the injury to the Domestic Industry.
- (c) **Developments in technology:** - As per information available on record, technology for production of the product concerned has not undergone any change.
- (d) **Export performance:** - The injury information provided to the Authority is provided separately for domestic and exports, to the extent the same could be segregated.
- (e) **Productivity:** - It is observed that the productivity of the domestic industry per day was constant during the injury period.

Magnitude of Injury and Injury margin:-

87. The non-injurious price of the subject goods produced by the domestic industry as determined by the Authority has been compared with the landed value of the exports from for determination of injury margin during the POI. Thus compared, the injury margin is worked out as under:

Particulars	Unit	Yibin Heist(specific denier)	China PR - Others
NIP	Rs./Kg	***	***
Landed Price	Rs./Kg	***	***
Injury Margin	Rs./Kg	***	***
Injury Margin (%)	%	5%-15%	15%-25%

M. CONCLUSIONS

88. Having regard to the contentions raised, information provided and submissions made by the interested parties and facts available before the Authority as recorded in the above findings and on the basis of the above analysis of the state of continuation of dumping and consequent injury and likelihood of continuation/recurrence of dumping and injury, the Authority concludes that: the subject goods are entering the Indian market from the subject county at dumped prices and dumping margin is significant. It is seen that the subject goods continue

to be exported to India at dumped prices inspite of the existing anti-dumping duty. It is noted that even at present, that is, when the anti-dumping duties are in force, the price undercutting and price underselling are significant. Should the domestic industry attempt to match the same, it would have a significant adverse impact on the price parameters. Alternatively, it would have injury on volume parameters. Hence, injury to the domestic industry is likely to recur, in case the present anti-dumping duty is allowed to cease. It is further noted that as per information available on record, the anti-dumping duty is required to be extended and modified.

N. RECOMMENDATIONS

89. Having concluded as above, the Authority is of the opinion that the anti-dumping measure is required to be extended and the quantum of anti-dumping duty is required to be modified and extended in respect of imports of the subject goods from the subject country as specified in the duty table below.

90. Having regard to the lesser duty rule followed by the Authority, the Authority recommends imposition of anti-dumping duty equal to the lesser of the margin of dumping and the margin of injury, so as to remove the injury to the domestic industry. The Authority further notes that there are significant differences within the product under consideration in terms of its weight and price. Therefore, anti-dumping duty in terms of reference price or fixed duty would not be appropriate in this case. Thus, the Authority recommends imposition of anti-dumping measure as an ad valorem duty, worked out as a percentage of the CIF value of imports of the subject goods from the subject country. Accordingly, definitive anti-dumping duty equal to the amount arrived at by applying the percentage indicated in Col 8 of the duty table given below is recommended to be imposed on all imports of the subject goods originating in or exported from subject country from the date of notification to be issued in this regard by the Central Government.

Duty Table

Sl. No	Heading/ Sub-heading	Description of goods	Country of Origin	Country of Exports	Producer	Exporter	Duty Amount As a % of C.I.F. Value
(1)	(2)	(3)	(4)	(5)	(6)	(7)	(8)
1.	5403	Viscose Filament Yarn *	China PR	China PR	M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation	M/s Yibin Hiest Fibre Limited Corporation	5.04%
2.	5403	Viscose Filament	China PR	China PR	Any	Any	16.90%

		Yarn *					
3.	5403	Viscose Filament Yarn *	China PR	Any	Any	Any	16.90%
4.	5403	Viscose Filament Yarn *	Any	China PR	Any	Any	16.90%

Note: Viscose Filament Yarn * herein means Viscose Rayon Filament Yarn up to 150 deniers (and $\pm 4\%$ permissible variation thereof) including mono filament yarn of less than 67 decitex also known as Viscose filament yarn or VFY, Rayon Filament Yarn, Art Silk Yarn, Cellulose Yarn or Rayon Yarn and includes all yarns made of 100% viscose yarns such as dyed yarn, flat yarn, microfilament micro yarn, twisted yarn (with the exclusion of embroidered yarn), doubled/ multiple ply yarn etc of VFY.

91. Landed value of imports for the purpose shall be the assessable value as determined by the Customs under the Customs Act, 1962 and all duties of customs except duties under sections 3, 3A, 8B, 9 and 9A of the Customs Tariff Act, 1975.

92. An appeal against this order shall lie before the Customs, Excise and Service Tax Appellate Tribunal in accordance with the Customs Tariff Act.

VIJAYLAXMI JOSHI, Designated Authority